THE PINK BOOKLET

(हिन्दी में)

समलैंगिकता से जुड़े 51 विशेष सवाल

संकलन व जवाब
दीपक कश्यप
मनोवैज्ञानिक

यह पुस्तिका
जैरी जॉनसन
को समर्पित है

आभार

सर्वप्रथम, मैं कैम गाडे का हार्दिक आभारी हूँ जिनकी सहायता के बिना यह पुस्तिका सम्भव नहीं थी। उन्होंने मेरे साथ अथक मेहनत की, और इस प्रोजेक्ट की रीढ़ की हड्डी बने रहे। मैं कनिश्क चौधरी का भी आभारी हूँ जिन्होंने बिना किसी आर्थिक लाभ के इस पुस्तिका का हिन्दी में अनुवाद किया है। इस प्रोजेक्ट के लिए वीडियो रिकॉर्ड करने के लिए जैनी गाडा को, और पुस्तिका में प्रयोग हुई खूबसूरत तस्वीरों के लिए जयेश गोपी और सभी मॉडेल्स को मेरा दिल से धन्यवाद।

मैं ग़ज़ल धालीवाल को भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तिका का प्रूफ-शोधन किया है। कैम और ग़ज़ल ने मिल के मुझे मेरे डिस्लेक्सिया से उबर कर इस पुस्तिका का संकलन करने में मदद की। मैं अपने माता-पिता का दिल से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे अपनाया और एक प्रेम से परिपूर्ण घर में मेरी परवरिश की। ऐसा घर पा कर कोई भी बच्चा अपने आप को भाग्यशाली समझेगा। मेरे धर्मपिता, मानवेंद्र सिंह गोहिल, के आर्थिक और भावुक समर्थन के बिना इस पुस्तिका की कल्पना करना भी कठिन था।

अन्त में, मैं जैरी जॉनसन का शुक्रिया अदा करता हूँ, जिनके प्यार, सहारे और धैर्य का इस पुस्तिका के पूरे हो पाने में बहुत बड़ा योगदान है।

भूमिका

अपने व्यक्तित्व की स्वतंत्रता का मूल्य चुकाना पड़ता है। दूसरों से अलग होना मतलब जीवन के हर क्षेत्र में जद्दो-जहद करना, चाहे वह आपके समुदाय की धामिर्क मान्यताएँ हों या फिर रिश्तेदारों के साथ समय बिताना, जो कि आपके भविष्य के बारे में उतावले रहते हैं, और आपके जीवन के फैसलों के बारे में तरह तरह के सवाल करते हैं।

हालांकि अकसर ये जद्दो-जहद हम खुद नहीं चुनते, पर ये मानना पड़ेगा कि इससे जीवन रोचक अवश्य बन जाता है। हमारे शुभचिंतकों को चिंता करने का कारण मिल जाता है, अगर हम कोई ऐसा कॅरियर चुनते हैं जो उन्होंने हमारे लिए पसंद नहीं किया था। लेकिन अगर बात हमारी सेक्सुअलिटी की हो, तो ये जद्दो-जहद हद से बढ़ जाती है।

सेक्सुअलिटी के विषय में सामान्य से "अलग" होना इतना बड़ा मुद्दा बन जाता है कि कई परिवार और दोस्तियॉ इसकी वजह से बिखर जाते हैं।

यह पुस्तिका मेरा एक छोटा सा प्रयास है, जिसके माध्यम से मैं आपकी अपने प्रियजनों और उनकी "अलग" सेक्सुअलिटी को समझने में सहायता करना चाहता हूँ।

यह पुस्तिका होमोसेक्सुअलिटी और बाइसेक्सुअलिटी से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों का सामना करती है।

जो नवयुवक और युवतियॉ अपनी सेक्सुअलिटी या अपने किसी प्रियजन की सेक्सुअलिटी को समझने और समाज में उनका पक्ष लेने की कोशिश कर रहे हैं, ये पुस्तिका उनकी भी सहायता करती है।

इस पुस्तिका का अध्यायों में विभाजन नहीं किया गया है; आप कोई भी पृष्ठ खोल कर प्रश्नों का उत्तर पढ़ना शुरू कर सकते हैं। लेकिन हम ने सब प्रश्नों

को कुछ एक मुख्य विषयों में ज़रूर बांटा है। जैसे, अगर कोई प्रश्न धर्म से संबंधित है, तो हम ने उसे 'धर्म' के शीर्षक में रखा है।

यह नाम 'Pink Booklet' क्यों?

यह इसलिए नहीं है क्यूँकि गुलाबी रंग अकसर औरतों या समलैंगिक पुरूषों के साथ जोड़ा जाता है। इसका कारण कुछ और है।

जब किसी कॉपोरेट कंपनी में किसी कर्मचारी को बरख़ास्त किया जाता है, क्यूँकि या तो वह ठीक से काम नहीं करता या फिर उसके विचार कंपनी को हानि पहुँचाते हैं, तो अंग्रेज़ी में ऐसा कहा जाता है कि उस कर्मचारी को "pink slip" दे दी गई, ताकि उसकी जगह कोई नया आए जो हमारी कंपनी के लिए बेहतर साबित हो।

इसी तरह, हमारी कुछ विचारधाराएँ ऐसी होती हैं जो हमें और समाज को हानि पहुँचाती हैं, हम में भय पैदा करती हैं और हमारे रिश्तों को क्षति पहुँचाती हैं। इस "pink booklet' की सहायता से हम उन विचारधाराओं को अपने जीवन से बरख़ास्त कर सकते हैं और अपने प्रियजनों के साथ अपने संबंधों को और भी संतोषजनक बना सकते हैं।

अस्वीकरण

इस पुस्तिका का उद्देश्य है पाठकों के अंतर्वैयक्तिक रिश्तों के संबंध में उनकी सहायता के लिये समान लिंग के प्रति यौन आकर्षण और लिंग की पहचानों को समझने में उनकी मदद करना. हालांकि यह लैंगिक अल्पसंख्यकों के माता–पिता, परिवारजनों और दोस्तों के पढ़ने के लिये है, लेकिन अन्य लोग भी इसे पढ़कर विभिन्न लैंगिकताओं और विभिन्न लिंग संबंधी विचारधाराओं के लोगों के साथ बेहतर व्यवहार कर सकते हैं।

आगे पढ़ने पर, आप देखेंगे कि इस किताब में विश्वसनीय सूत्रों से ली गयी जानकारी प्रदान की गयी है, लेकिन इसे समकक्ष मूल्यांकित चिकित्सीय पत्रिका नहीं समझा जाना चाहिये और न ही रोगनिदान के लिये मनश्चिकित्सा के स्थान पर इसका इस्तेमाल किया जाना चाहिये. छपाई के समय हमने पूरा प्रयास किया है कि इस पुस्तिका में दी गयी सभी जानकारियाँ सटीक हों। लेकिन लेखक और प्रकाशक किसी भी तरह की त्रुटि या भूल के कारण किसी भी पक्ष के प्रति ज़िम्मेदारी को अस्वीकार करते हैं, चाहे यह त्रुटि या भूल किसी लापरवाही, संयोग या किसी भी अन्य कारण से हुई हो।

साथ ही हम यह भी बताना चाहेंगे कि हालांकि यह पुस्तिका पुरुषों और महिलाओं में होमोसेक्सुअलिटी का समान वर्णन करती है, लेकिन भाषा में सुविधा की दृष्टि से इस्तेमाल किये गये सर्वनाम मुख्यतः पुल्लिंग हैं, जो महिलाओं पर भी लागू होते हैं, बशर्ते कि चर्चा का विषय विशेषतः पुरुष शरीर से संबंधित न हो।

हमें उम्मीद है कि यह पुस्तिका मानव लैंगिकता के संवेदनशील विषय पर प्रकाश डालेगी और इस मुद्दे की जटिलताओं को दर्शाते हुए पाठकों को बतायेगी कि लोगों की लैंगिकता से जुड़ी समस्याएं काफी हद तक एक सी होती हैं।

सूची

समलैंगिकता के विषय में 8
माँ बाप से सम्बंधित सवाल 21
निश्चितता 35
क्या बदलाव मुमकिन है? 41
धर्म 48
हेट्रोसेक्सुअल लोगों के साथ सम्बन्ध 52
समलैंगिकता और समाज 54
यौन और मानसिक स्वास्थ्य 65
शादी 71
बाइसैक्सुअलिटी 75
सन्दर्भ 78

समलैंगिकता के विषय में

1. मेरे बच्चे के ऐसा कहने का क्या अर्थ है कि वह समलैंगिक / होमोसेक्सुअल है?

जब आपका बच्चा आपसे अपने होमोसेक्सुअल होने की बात कहता है या आपके सामने होमोसेक्सुअल के रूप में उभर कर आता है, तो उसके कहने का अर्थ यह है कि वह अपने ही लिंग के किसी व्यक्ति की ओर आकर्षित है; यानि कि पुरुष का पुरुष के प्रति आकर्षण और महिला का महिला के प्रति आकर्षण। यह आकर्षण सिर्फ यौनेच्छा तक सीमित नहीं होता बल्कि प्रेम और भावनाओं से भी जुड़ा होता है। चिंता न करें, यह कोई बीमारी या विकार नहीं है। इसका अर्थ बस इतना है कि आपके बच्चे की प्रेम संबंधी और भावनात्मक ज़रूरतें आपके आस–पास मौजूद अन्य बच्चों से कहीं अलग हैं।

आपको समझना चाहिये कि जब आपका बच्चा आपके सामने अपनी भावनाओं को 'प्रकट' करता है, तो वह आपसे जुड़ने का प्रयास कर रहा है और तीन स्तरों पर आपके सहयोग की उम्मीद रखता है:

- व्यक्तिगत
- अंतर्वैयक्तिक
- सामाजिक

व्यक्तिगत रूप से आपका बच्चा आपको बता रहा है कि उसकी लैंगिक ज़रूरतें लैंगिकता से जुड़ी आपकी सोच से परे हैं और वह होमोसेक्सुअल है। आपको समझना चाहिये कि आपके बच्चे ने अपनी होमोसेक्सुअलिटी और असामान्य लैंगिकता वाले व्यक्ति के रूप में अपनी आपबीती को आपके सामने रखने के लिये काफी हिम्मत जुटाई है। और ऐसा करके वह माता–पिता या अभिभावक के रूप में आपसे प्यार और सहयोग की उम्मीद रखता है।

अंतर्वैयक्तिक स्तर पर, आपका बच्चा आपकी ओर से पूरे प्यार की मांग कर रहा है, क्योंकि वह आपके सामने खुद से जुड़ी एक ऐसी बात रखने जा रहा है, जिसे पूरी तरह समझना या उसका समर्थन करना आपके लिये मुश्किल

हो। और वह उम्मीद कर रहा है कि उसका यह नया रूप आपको पसंद न आने के बावजूद आप इसे असामान्य कहकर नकार देने की जगह इसपर और जानकारी और शिक्षा प्राप्त करें।

इसके बाद, सामाजिक स्तर पर, आपका बच्चा चाहता है कि जब वह एक होमोसेक्सुअल के रूप में समाज का सामना करे और विवाह के दबाव जैसे सामाजिक बंधनों को चुनौती दे, तब आप उसके साथ खड़े हों, और उसका साथ दें। साथ ही वह आपसे यह भी पूछ रहा है कि क्या एक समलिंगी के माता–पिता/अभिभावक के रूप में आप औरों के सामने उनका पक्ष लेने के लिये तैयार हैं।

इसे और भी बेहतर ढंग से समझने के लिये, आपके आस–पड़ोस में देखें या अपने परिवार के बाहर या भीतर आपसे मिल चुके अलग–अलग तरह के लोगों के विषय में सोचें। उनमें से कोई भी एक जैसा नहीं दिखता; एक जैसे जुड़वाँ भाई–बहनों में भी कुछ चीज़ें अलग होती हैं। हमारे चेहरे, कद, बाल, आँखें और कई अन्य चीज़ें औरों से अलग होती हैं। लेकिन हम इन भिन्नताओं को स्वीकार करते हैं क्योंकि ये स्पष्ट और अपरिहार्य रूप से भौतिक भिन्नताएं हैं और रोज़ इन भौतिक भिन्नताओं का सामना करते हुए हम यह मानते हैं कि दुनिया में हमसे अलग, कई तरह के लोग हैं।

ठीक इसी तरह हम मनुष्य लैंगिक इच्छाओं, झुकाव, सोच और अपने लिंग से संबंधित विचारधारा में भी एक–दूसरे से अलग होते हैं। आसान शब्दों में, जैसे हम एक–दूसरे से अलग दिखते हैं और अलग व्यवहार करते हैं, वैसे ही हमारा एक विशिष्ट लैंगिक स्वभाव होता है। लेकिन यह भिन्नता हमें ऊपर दी गयी किसी भिन्नता से ज़्यादा चिंताजनक लगती है क्योंकि हम इन भिन्नताओं के विषय में ज़्यादा जानते नहीं हैं और लैंगिकता से संबंधित विचारधारा दुविधाओं और तर्कहीन मान्यताओं से भरी है। अपने आप से एक सवाल पूछें: हम सभी के लैंगिक स्वभाव एक से कैसे हो सकते हैं? चूंकि हम अपने लैंगिक स्वभाव को सभी के लिये सामान्य मानते हैं, इसलिये हमारी समझ से परे लैंगिक स्वभाव रखने वाले लोगों को हम असामान्य या अप्राकृतिक के दर्जे में डाल देते हैं. वास्तव में, हम सभी जटिल और अनोखे हैं।

2. क्या होमोसेक्सुअलिटी एक चुनाव है? क्या वह फिर से सामान्य होने का फैसला ले सकता/सकती है?

नहीं, होमोसेक्सुअलिटी एक जागरुक चुनाव नहीं है। आपके बच्चे ने अचानक किसी दिन समान लिंग के किसी व्यक्ति की ओर आकर्षित होने का फैसला नहीं लिया है। खुद से पूछिये, क्या आपने कभी विपरीत लिंग के व्यक्ति के प्रति अपने आकर्षण का चुनाव किया है? या अगर अब आप चाहें तो होमोसेक्सुअल बन सकते हैं? इसी तरह, जिस प्रकार एक विषमलैंगिक व्यक्ति के रूप में आपने अपना झुकाव नहीं चुना, उसी प्रकार कोई होमोसेक्सुअल व्यक्ति अपने झुकाव का फैसला कैसे ले सकता है? कोई भी मनुष्य अपने आकर्षण का फैसला नहीं ले सकता। अधिकांश होमोसेक्सुअल व्यक्तियों का कहना है कि जीवन के शुरुआती चरण या किशोरावस्था में ही उन्होंने अपनी होमोसेक्सुअलिटी को महसूस कर लिया था।

वास्तव में, आप सोच सकते हैं कि अपने इस रूप को महसूस करना उनके लिये भी उतना ही या उससे कहीं ज़्यादा चिंताजनक और दुविधा भरा अनुभव रहा होगा, जितना यह आज आपके लिये है। यह समझना ज़रूरी है कि ऐसे भावनात्मक पड़ाव पर आपको अपने बच्चे से पूछना चाहिये: ''क्या तुम ठीक हो?'' ''उम्मीद है तुम्हें खुद को स्वीकार करने में ज़्यादा तकलीफ नहीं हुई।'' कई बार दूसरों के दर्द की समझ आपको अपने दर्द से जूझने की ताकत दे सकती है।

इसलिये लैंगिक झुकाव फैसले का मुद्दा न होने की स्थिति में, उसके दुबारा सामान्य होने का फैसला लेने का सवाल ही नहीं उठता। कई लोग ऐसा मानते हैं कि लोग अपने लैंगिक आकर्षण का चुनाव कर सकते हैं, लेकिन वैज्ञानिक जानकारी यही बताती है कि लैंगिक झुकाव और आकर्षण तय करना मनुष्य के हाथों में नहीं है।

साथ ही लोगों को व्यवहार और झुकाव में अंतर को भी समझना चाहिये।

व्यवहार वह है; जो आपकी गतिविधियों में दिखाई देता है।

झुकाव वह है; जो आपकी रुचि और आपकी इच्छा को दर्शाता है।

इसलिये, कोई होमोसेक्सुअल व्यक्ति विपरीत लिंग के व्यक्ति के साथ सफलतापूर्वक शारीरिक संबंध बना भी ले, तब भी समान लिंग के लोगों के प्रति उनका आकर्षण और झुकाव बदलता नहीं है। यहाँ तक की सफलतापूर्वक लोगों के ''झुकाव को बदलने वाले'' धार्मिक उपचारों पर किये गये अध्ययन भी सफलता की दर न के बराबर दिखलाते हैं। अगर खुद को सफल बताने वाले इन मामलों को ध्यान से देखा जाये, तो आप पायेंगे कि अध्ययनकर्ताओं ने द्विलिंगी और समलिंगी लोगों में फर्क नहीं किया है और व्यवहार तथा झुकाव के बीच के अंतर पर ध्यान नहीं दिया गया है।

असल में, अधिकांश होमोसेक्सुअल रूपांतरण अभियानों में, होमोसेक्सुअलकों के झुकाव को रूपांतरित करने के असफल प्रयासों के दौरान उनमें खुद को कोसने वाला अपराध बोध और शर्म की भावना विकसित की जाती है।

3. कुछ लोग होमोसेक्सुअल क्यों होते हैं?

लैंगिकता एक बहुत ही जटिल विषय है, और मनुष्यों में होमोसेक्सुअलिटी का कोई एक विशिष्ट कारण ढूंढना काफी मुश्किल है। लेकिन कुछ संकल्पनाओं को अन्य संकल्पनाओं से ज़्यादा समर्थन मिला है, जो इन्हें सामाजिक–धार्मिक विचारधारा में असामान्य लैंगिकता के प्रति प्रचलित अटकलों के मुकाबले ज़्यादा बेहतर स्पष्टीकरण का दर्जा देता है।

एपिजेनेटिक (अनुवांशिक) संकल्पना: मनुष्य की सभी विशेषताएं उसके डीएनए पर जीन्स के रूप में कूटलिखित होती हैं। उनकी आँखों के रंग से लेकर उनके लैंगिक झुकाव जैसी सभी विशेषताएं जन्म से पहले के विकास के चरणों के दौरान विकसित होती हैं। एपिजेनेटिक मार्कर्स ऐसे रसायन होते हैं, जो तय करते हैं कि कोई जीन कितना अभिव्यक्त होगा। इसे आप किसी जीन को बंद या चालू करने वाला एक स्विच मान सकते हैं। अध्ययनकर्ताओं का मानना है कि डीएनए क्रम के इर्द–गिर्द लिपटे विशेष प्रकार के एपि–मार्क, जननांग या लैंगिक पहचान बदले बिना लैंगिक झुकाव को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन डीएनए क्रम पर कुछ विशिष्ट जीन्स की अभिव्यक्ति के कारण होमोसेक्सुअलिटी के विकास की संकल्पना का समर्थन करता है, जो एक स्वतंत्र होमोसेक्सुअल जीन की पुरानी संकल्पनाओं से अलग है।

मस्तिष्क संरचना संकल्पना: यह विषमलिंगी और समलिंगियों के मस्तिष्क का काफी हद तक अनिर्णायक अध्ययन है। अध्ययन में पाया गया कि होमोसेक्सुअल पुरुष के मस्तिष्क की संरचना सामान्य महिला के मस्तिष्क से काफी मिलती–जुलती है और ऐसा ही सामान्य पुरुषों और समलिंगी महिलाओं की स्थिति में भी पाया गया। लेकिन, इस बात का पता नहीं लगाया जा सका है कि मस्तिष्क की संरचना लैंगिकता को तय करती है या मस्तिष्क की संरचना लैंगिक झुकाव के अनुसार विकसित होती है, जो अनुवांशिक स्तर पर ही तय हो जाती है।

हॉर्मोन संकल्पना: यह जन्म से पहले के विकास से संबंधित एक और लोकप्रिय संकल्पना है। अध्ययन के अनुसार गर्भ में लैंगिक विकास के दौरान बच्चे पर ऐंड्रोजन या टेस्टोस्टीरॉन जैसे पुरुष हॉर्मोनों का संपर्क बच्चे की लैंगिकता तय करता है। विकास के चरण में कम टेस्टोस्टीरॉन संपर्क प्राप्त करने वाले नर भ्रूण के समलिंगी होने की संभावना होती है। इसी प्रकार, मादा भ्रूण से ज़्यादा टेस्टॉस्टीरॉन संपर्क होने पर उसके समलिंगी होने के आसार बढ़ जाते हैं।

कई अध्ययनों के बाद भी कोई भी वैज्ञानिक ऐसा नहीं कहता कि लैंगिकता पर कारण और प्रभाव का कोई विशिष्ट चक्र लागू होता है। ऐसा भी हो सकता है कि उपर्युक्त सभी तथ्य बच्चे की लैंगिकता तय करते हों। लेकिन, इन बातों का सार यही है कि लैंगिक झुकाव का चुनाव नहीं किया जा सकता और यह कोई मानसिक या अनुवांशिक बीमारी नहीं है; और न ही किसी समान लिंग के व्यक्ति द्वारा उत्पीड़न के कारण होमोसेक्सुअलिटी विकसित होने की लोकप्रिय मान्यता सच है। होमोसेक्सुअलिटी का कारण पता चलना वैज्ञानिक उद्देश्यों के लिये महत्वपूर्ण है, लेकिन उससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण यह है कि हम असामान्य झुकाव रखने वाले लोगों को पूरा सम्मान और आदर दें।

4. क्या समलैंगिता प्राकृतिक है? क्या ये मनुष्यों के अलावा बाकी जीव जंतुओं में भी पायी जाती है?

इस सवाल का जवाब जानने के लिए ये ज़रूरी है की आप प्राकृतिक का मतलब समझें। हम सोचते हैं कि जो हमारे सामने हमेशा से चल रहा है या जो सामान्य है वही प्राकृतिक है। जबकि सच ये है कि जो भी इस प्रकृति में है, जो भी इस दुनिया में है, वो सब प्राकृतिक है। एक उदाहरण के लिए उस इंसान के बारे में सोचिए जो सारी ज़िन्दगी ऐसे लोगों के बीच रहा है जिनकी आँखें भूरी हैं। वह समझेगा कि नीली आखों वाले लोग असामान्य और अप्राकृतिक होते हैं। अपरिचित और अप्राकृतिक में ज़मीन आस्मां का अंतर होता है। रिग वेद में लिखा है ''विकृति एवं प्रकृति'', यानि वो अपरिचित चीज़ें जो हमें प्रकृति में दिखती हैं दरअसल वो भी प्रकृति का हिस्सा होती हैं।

समलैंगिकता इंसान के अलावा इस दुनिया के 15000 जानवरों की प्रजातियों मे पायी जाती है। यह देखा गया है कि समलैंगिक जीव जंतु एक दूसरे के साथ एक जोड़े की तरह रहते हैं और ज़िन्दगी साथ बिताते हैं। सेक्स उनके लिए उतना ही ज़रूरी होता है जितना किसी गैर समलैंगिक के लिए। दुनिया में जीव जंतुओं की ऐसी काई प्रजाति नहीं है जिसमें समलैंगिक प्राणी न हों।कुछ प्रजातियां ऐसी होती हैं जो सेक्स नहीं करती, जैसे समुद्री अर्चिन और अफिस। उनके अलावा जीव जंतुओं में से कई द्विलिंगिक यानि बाईसेक्सुअल होते हैं, यानि उनको खुद के लिंग वाले और दूसरे लिंग वाले दोनों तरीके के प्राणियों से आकर्षण होता है।

समलैंगिकता के बारे में विभिन्न देशों की प्राचीन संस्कृति में भी ज़िक्र किया गया है और किसी भी संस्कृति ने इसे बुरा नहीं बोला है। पुराने मंदिरों में दीवारों पर समलैंगिक और गैर समलैंगिक सेक्स के चित्र बने हुए हैं। हिन्दू संस्कृति में मंदिरों का निर्माण छठी शताब्दी में शुरू हुआ

और 12–14 शताब्दियों में सबसे ज्यादा मंदिरों का निर्माण हुआ (खासकर पूरब और दक्षिण भारत में)। इन मंदिरों की दीवारों और दरवाज़ों पर देवी, देवता, राक्षस, साधू, जानवर, पंडित, महाकाव्यों आदि के चित्र बने हुए हैं। इन सबके बीच, यौन मुद्राओं में समलैंगिक और गैर समलैंगिक चित्र भी हैं जिनको आजकल का समाज और कानून अप्राकृतिक कहता है। यहाँ तक की बौद्ध और जैन मंदिरों में भी ये चित्रण पाये गए हैं।

हमारी पौराणिक कथाओं और किंवदंतियों में समलैंगिकता और लिंग भिन्नता के बारे में कई बार ज़िक्र हुआ है। यह पाया गया है कि अंग्रेजों के आने से पहले के भारत में समलैंगिकता को प्राकृतिक माना जाता था। पूर्वजों द्वारा स्वीकारे हुए सारे तथ्यों को कई लोग आजकल के समय में नहीं मानते । जैसे कि ''सती'', जो मानवता और मनुष्य की स्वतंत्रता के विरूद्ध है। किसी चीज़ को समझने के लिए ये ज़रूरी नहीं है की हम देखें कि वो कितने समय से चल रही है या फिर कितने लोग उसे समर्थन देते हैं, बल्कि ये ज़रूरी है कि वो मानवता के कितने नज़दीक है।

5. सेक्स, लिंग, आचरण और व्यवहार में क्या अंतर है?

सेक्स : शरीर और जननांगो की शारीरिक उपस्थिति के अनुसार हम मनुष्यों को पुरूष,स्त्री और इंटरसेक्स (न पुरूष, न स्त्री) के रूप में देखते हैं।

जेंडर (लिंग): हम अपने शरीर को लेकर क्या सोचते हैं। हमारी अपने शरीर को लेकर क्या मानसिक धारणाएं और अनुभव हैं।

इस वर्गीकरण के अनुसार, हम मनुष्य को आदमी, औरत और हिजरा के रूप में देखते हैं। इसका ये मतलब नहीं है कि बाकी भिन्न प्रकार के लिंग प्रकृति में मौजूद नहीं होते।

ओरिएंटेशन (अभिविन्यास): हम किसकी ओर आकर्षित होते हैं।
इस वर्गीकरण के अनुसार, हम मनुष्यों को स्ट्रेट (विषमलैंगिक), गे (समलैंगिक), बायसेक्सुअल (उभयलिंगी), असेक्सुअल (अलैंगिक), आदि के रूप में देखते हैं।
व्यवहारः यह बर्ताव का तरीका दर्शाता है, व्यवहार के कारण समाज मनुष्यों को मर्दाना, स्त्री और उभयलिंगी (होमोसेक्सुअल) के रूप में देखता है.
काफी लोग व्यवहार और ओरिएंटेशन, जेंडर और ओरिएंटेशन के बीच अक्सर भ्रमित होते हैं। जेंडर का मतलब ये है कि कोई व्यक्ति अपने को किस लिंग का मानता है (आदमी, औरत या हिजरा). ओरिएंटेशन किसी भी व्यक्ति का दूसरे के प्रति आकर्षण (चाहे वो शारीरिक, भावनात्मक, यौन या रोमांटिक, आदि हो) के पैटर्न को दर्शाता है। आकर्षण के इन नमूनों (पैटर्न) को आमतौर पर निम्नलिखित तरीकों से पहचाना जा सकता है :

स्ट्रेट : विपरीत सेक्स के लिए आकर्षण के एक पैटर्न को संदर्भित करता है।

गे या लेस्बियन : समलैंगिक एक ही सेक्स के लिए आकर्षण के पैटर्न को संदर्भित करता है।

बायसेक्सुअलः उभयलिंगी दोनों लिंगों के लिए आकर्षण के एक पैटर्न को संदर्भित करता है।

आकर्षण एक भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक अनुभव है और यौन व्यवहार से अलग है। इसलिए, सेक्सुअल ओरिएंटेशन किसी भी व्यक्ति के दूसरों

के लिए शारीरिक, भावनात्मक, यौन, और रोमांटिक आकर्षण के एक पैटर्न को दर्शाता है। जैसा कि जेंडर में होता है, वैसे ही सेक्सुअल ओरिएंटेशन में भी व्यक्ति या तो पूरी तरह से गे या पूरी तरह से स्ट्रेट या फिर इन दोनों के बीच की किसी सीमा में होता है।

दूसरी ओर व्यवहार किसी भी व्यक्ति के उठने बैठने के लहज़े, इशारे, भाषण, आदि के पैटर्न को दर्शाता है। कुछ व्यवहारों को हम मनुष्यों ने अपनी सामाजिक समझ के अनुसार मर्दाना, जनाना या फिर इनके बीच (हिजरा) के हिसाब से वर्गीकृत किया हुआ है। इस वर्गीकरण के बावजूद, व्यवहार जेंडर या ओरिएंटेशन से पूरी तरह से सम्बंधित नहीं है, हालाँकि कुछ संबंध मौजूद हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, हम अपने बीच कई पुरूषों को पाते हैं जो स्ट्रेट हैं मगर उनका हाव भाव स्त्रियों से मिलता जुलता है। ये धारणा कि गे पुरूष महिलाओं की तरह के हाव भाव रखते हैं, सही नहीं है। वह दूसरी बात है कि यदि हम किसी भी चीज़ को देखते हैं जो हमारे लिए नयी है, तो हम उसे समझने और स्वीकार करने में झिझकते हैं।

जब माँ बाप ये समझ लेते हैं कि जेंडर और ओरिएंटेशन को चुना नहीं जा सकता बल्कि ये उनके बच्चों में पहले से मौजूद होते हैं जैसे कि बालों का रंग, लम्बाई, आदि, तब वह अपने अंदर के छुपे हूए डर को दूर करते हैं। यह वो डर है जो आपको आपके बच्चे के व्यहवार में विपरीत लिंग के कुछ इंडीकेटर्स को देख कर आता है। जब आपका बच्चा अपनी सेक्सुअलिटी के बारे में समझ रहा होता है और जब वो आपको इसके बारे में समझाने की कोशिश करता है, वो समय आपके परिवार के लिए काफी भावुक हो सकता है। ऐसे में यदि आप अपने बच्चे का पूरा साथ देते हैं और उसे उतना ही प्यार करते हैं जितना पहले करते थे, तब आप इस भावुक मोड़

से काफी हद तक उबर आते हैं। इसके साथ ही आपके और आपके बच्चे के बीच का नाता भी काफी सुगड़ होगा।

प्यार और समर्थन से आप बड़ी से बड़ी परिस्थितियों से आसानी से निपट सकते हैं। गुस्से और आलोचना से कभी भी किसी भी मसले का अच्छा हल नहीं निकल सकता।

6. क्या ये हार्मोन के लेवल सही न होने की वजह से है? क्या मेरा बेटा नपुंसक है?

जी नहीं। हार्मोन का आपके बच्चे के गे, लेस्बियन या बायसेक्सुअल होने से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। जैसा कि हमने पहले बताया है कि हार्मोन का काम माँ के गर्भ में बच्चे के पैदा होने से पहले अलग होता है, जैसे कि बच्चे के मस्तिष्क और लिंग का विकास। बच्चा पैदा होने के बाद उस बच्चे के अंदर के हार्मोन का काम अलग होता है जैसे कि उसकी कद काठी, उसका यौन विकास, शरीर के बाकी कार्यों में सहयोग देना, आदि। सेक्स हार्मोन बच्चे में उसकी आवाज़ में भारीपन या कोमलता (जिसे लोग मर्दानापन/ जनानापन कहते हैं), दाढ़ी मूंछ/ स्तन निकलना, महिलाओं में पीरियड होना, आदि के आने में सहयोग करते हैं।

हार्मोन बच्चे के ओरिएंटेशन में कोई भी सहयोग नहीं करते मगर उसके यौन व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं।

हार्मोन का काम हमारे शरीर में उसी तरह होता है जैसे कि आपकी गाड़ी में पेट्रोल का। पेट्रोल केवल ये सुनिश्चित कर सकता है कि आपकी गाड़ी चले, मगर ये नहीं सुनिश्चित कर सकता कि किस दिशा में चले।

यदि किसी व्यक्ति के हार्मोन के साथ छेड़ छाड़ करी जाती है (कई बार उसे स्ट्रेट बनाने के प्रयास में), तो वह उस व्यक्ति के पूरे शरीर में भयंकर बीमारियां पैदा कर सकती है। नींद नहीं आना, ब्लड प्रेशर, दिल की बीमारी, दिमागी नसों का फूलना, कैंसर, खून के थक्के बनना, मन विचलित रहना, आदि ये सब हार्मोन के स्तर को छेड़ने पर हो सकते हैं। इसी लिए हार्मोन थेरेपी को काफी सोच समझ के और एक्सपर्ट डॉक्टर के निरीक्षण में करवाना चाहिए।

नपुंसकता एक ऐसी परेशानी है जिसमें व्यक्ति के स्पर्म (शुक्राणु) की गति, उनकी गणना, या फिर लिंग में यौन आकर्षण नहीं शुरू होता। इसका व्यक्ति के गे या स्ट्रेट होने से कोई मतलब नहीं है। गे और स्ट्रेट दोनों किस्म के लोग नपुंसक हो सकते हैं। इसके इलाज से व्यक्ति के ओरिएंटेशन पर कोई फर्क नहीं पड़ता।

अगर गे होना और नपुंसकता में कोई सम्बन्ध है तो इसका मतलब ये है कि वो सारे गे लोग जिनको उनके परिवार वालों ने शादी के लिए मजबूर किया होता है, वो कभी बच्चे पैदा नहीं कर सकते। यह तो वास्तविकता और अनुसंधान के परे बात है।

एक और मिथक है कि गे लोग एक दूसरे से ही सम्बन्ध बनाना चाहते हैं क्यूंकि इस तरह से वो अपनी नपुंसकता को छुपा सकते हैं। आपका बच्चा नपुंसक नहीं है और न ही उसने गे होना चुना है, वो किसी से भागने के लिए भी गे नहीं बना है क्यूंकि ये कोई चुनाव करने की चीज़ नहीं है, वो प्राकृतिक तौर पर अपने ही लिंग के लोगों की तरफ भावनात्मक और यौनिक तरीके से आकर्षित होता है क्यूंकि वो जानता है कि उस तरीके से वो एक खुशनुमा और भरपूर ज़िन्दगी जी सकता है।

7. जब आप अपने ही लिंग के लोगों की तरफ आकर्षित होते हैं तो आप शारीरिक और भावनात्मक तौर पर अपने में क्या बदलाव होता हुआ पाते हैं?

सही सवाल ये होगा कि आपको कैसा महसूस होता है जब आप अपने से विपरीत लिंग के व्यक्तियों की तरफ आकर्षित होते हैं?

आकर्षण और प्यार मानवी भावनाएँ हैं जो हम सभी एक जैसे ही महसूस करते हैं चाहे हम स्ट्रेट हों या फिर किसी और सेक्सुअलिटी के। कई शोधों के अनुसार सभी मनुष्यों में एक जैसे ही शारीरिक बदलाव आते हैं जब वो किसी की तरफ आकर्षित होते हैं। दिल की धड़कन तेज़ होना, गालों और होंठों पर लाली आना, आँखो की पुतलियों का चौड़ा होना, दिमाग में रासायनिक क्रियाएँ आदि ये सब सारे मनुष्यों में किसी की तरफ आकर्षित होने पर एक जैसे होते हैं। (यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया की वेलकम जीव तंत्रिका विज्ञान प्रयोगशाला के प्रोफेसर समीर जेकी और जॉन रोम्या ने अपने शोध में यही पाया है, उन्होंने fMRI कार्यात्मक चुंबकीय अनुवाद इमेजिंग के जरिये 24 लोगों में पाया कि सब के दिमाग के हिस्सों में एक ही तरह के बदलाव होते हैं जब वो अपने प्रेयस/प्रेयसी का चित्र देखते हैं। (ये 24 लोग गे, स्ट्रेट,लेस्बियन, बायसेक्सुअल, ट्रांसजेंडर और भिन्न सेक्सुअलिटीस के थे)।

सांस्कृतिक तौर पर अपने प्यार को व्यक्त करने के हमारे तरीके अलग हो सकते हैं, मगर सभी मनुष्यों में प्यार और आकर्षण को अनुभव करने की भावनाएं और शारीरिक बदलाव एक जैसे होते हैं, बिलकुल उसी तरह जैसे हम सारे मनुष्य पीड़ा या दुःख को एक जैसे अनुभव करते हैं।

8. क्या भारत में गे होना गैरकानूनी है?

भारतीय दंड संहिता के सेक्शन 377 ने किसी भी प्रकार के गैर योनि वाली यौन क्रिया को अप्राकृतिक और गैरकानूनी बोला है। इसी सेक्शन 377 को समलैंगिकों के खिलाफ इस्तेमाल किया जाता है। यानि कि होमोसेक्सुअल लोगों के बीच सेक्स को गैरकानूनी बोला गया है न कि उनके होमोसेक्सुअल होने को. किसी को होमोसेक्सुअल होने के लिए दण्डित नहीं किया जा सकता, लेकिन अगर ये साबित हो जाये कि किसी ने, भले वो स्ट्रेट हो या होमोसेक्सुअल, गैर योनि यौन क्रिया की है तो वो गैरकानूनी है।

2 जुलाई 2009 को दिल्ली हाई कोर्ट ने सेक्शन 377 को अवैध घोषित कर दिया था। इसका मतलब ये है, कि कोई भी दो व्यक्ति (स्ट्रेट या होमोसेक्सुअल या ट्रांसजेंडर) जो 18 साल के ऊपर हैं, बिना किसी क़ानूनी डर के अपनी मर्ज़ी से यौन क्रियाएँ कर सकते हैं। उन्हें इसके लिए कोई भी दोषी नहीं ठहरा सकता न ही सजा दे सकता है।

लेकिन कुछ धार्मिक और नैतिक अतिवादी गुटों ने सुप्रीम कोर्ट में दिल्ली हाई कोर्ट के इस फैसले के खिलाफ याचिका दायर की। 13 दिसंबर, 2013 को सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली हाई कोर्ट के फैसले को रद्द कर दिया और कहा कि कानून बदलना लोक सभा का दाइत्व है, कोर्ट का नहीं। इस फैसले की मीडिया और सभी बुद्धिजीवी लोगों ने बहुत निंदा की है, और फैसले के विरूद्ध अपील की सुनवाई जारी है।

माँ बाप से सम्बंधित सवाल

9. क्या माँ बाप का अपने बच्चे के होमोसेक्सुअल होने में कोई हाथ होता है? क्या उन्होंने अपने बच्चे के बचपन में काई गलती की थी जिससे उनका बच्चा होमोसेक्सुअल बन गया?

या

10. यदि हमारे बच्चे ने हमको अपने बचपन में या फिर थोड़ा पहले अपने होमोसेक्सुअल होने के बारे में बताया होता तो क्या हम कुछ कर पाते (उसे स्ट्रेट बनाने के लिए?)

यह सवाल फ्रायड के सिध्दांत से निकला है जिसमें उसने बोला है कि होमोसेक्सुअलिटी की वजह बच्चे के आस पास का वातावरण, या रोबदार माँ–बाप हो सकते हैं। बाद के शोधों में यह पता चला की फ्रायड का सिद्धांत गलत है, होमोसेक्सुअलिटी प्राकृतिक है और वातावरण या लोग उसे प्रभावित नहीं कर सकते।

न्यू गिनी की एक जनजाति में लड़कों को उनकी किशोरावस्था में थोड़े समय के लिए महिलाओं से दूर कर दिया जाता है। इस दौरान उनको अपने से बड़े लड़कों के साथ यौन सम्बन्ध रखने के लिए कहा जाता है, यह लड़कों को पुरूष बनाने की उनकी प्रथा है। ये लड़के अपनी किशोरावस्था के काफी साल अपने से बड़े लड़कों को मौखिक सेक्स देते

हैं और उनके वीर्य को निगल जाते हैं। वो ये मानते हैं कि ऐसा करने से वो ज़्यादा बहादुर पुरूष बनेंगे (जैसे ग्रीक और रोमन लोगों में होता था)। व्यसक होने पर यह पाया गया है कि 95% लड़के स्ट्रेट ज़िन्दगी जीते हैं और कुछ 5% या उससे कम होमोसेक्सुअल की। यह 5% दुनिया की अलग अलग जनजातियों में होमोसेक्सुअल्स की संख्या का आंकड़ा भी है।

एक दूसरा उदाहरण है डेविड रेमेर का। डेविड एक स्वस्थ बालक था। उसका लिंग खतना करते समय क्षतिग्रस्त हो गया था। उसके माँ–बाप ने उसे फिर एक लड़की की तरह पालना शुरू किया। मनोवैज्ञानिक डॉक्टर जॉन मनी की देख–रेख में ये पूरी प्रक्रिया हुई। उन्होंने यहाँ तक कहा कि ये प्रक्रिया होमोसेक्सुअल को स्ट्रेट बना सकती है और होमोसेक्सुअलिटी को लोग खुद से चुन सकते हैं। मगर जब डेविड 9 साल का हुआ तो वो अपने को एक लड़की की तरह नहीं देख पाया और उसने एक लड़के की तरह रहना शुरू कर दिया। डेविड ने बाद में अपनी कहानी दुनिया के सामने रखी और बताया कि कैसे इस प्रक्रिया ने उसे मानसिक और शारीरिक तौर पर प्रताड़ित किया है। गंभीर अवसाद, वित्तीय अस्थिरता, और एक परेशान शादी से वर्षों से पीड़ित डेविड ने आत्महत्या कर ली।

एक अच्छे माँ–बाप की तरह, आप ये सोचना बंद करें कि आपने क्या गलत किया होगा। बल्कि ये सोचें कि आप अब क्या सही कर सकते हैं अपने बच्चे को लेकर, खासकर अब जब उसे आपके प्यार की सबसे ज़्यादा जरूरत है।

11. क्या बचपन में हुए यौन शोषण से बच्चे समलैंगिक बन सकते हैं?

नहीं। शोध के अनुसार समलैंगिकता (होमोसेक्सुअलिटी) जेनेटिक होती है और इसे किसी भी तरह से बदला नहीं जा सकता। यही कारण है कि इसे इंसान की उम्र के किसी भी समय में नहीं बदला जा सकता। होमोसेक्सुअलिटी को बचपन में हुए यौन शोषण से लिंक करने वाले सारे तथ्यों को मॉडर्न साइंस ने गलत साबित कर दिया है।

2007 में वीमेन एंड चाइल्ड डेवलपमेंट मिनिस्ट्री ने बच्चों के यौन शोषण पर एक शोध पत्र जारी किया। उसके अनुसार भारत में 53.22 % बच्चे यौन शोषण का शिकार होते हैं। इसमें से 52.94 % लड़के और 47.06 % लड़कियां होती हैं। अगर बचपन में हुआ यौन शोषण समलैंगिकता का कारण है तो हमारे देश में कम से कम 50 % लड़के और 50 % लड़कियां समलैंगिक होते। मगर ऐसा नहीं है और समलैंगिक लोग भारत की आबादी का 5–10 % हिस्सा हैं।

एक सम्बन्ध ये जरूर है कि समलैंगिक बच्चों के ऊपर यौन शोषण की घटनाएं ज़्यादा घटित होती हैं। जैसा कि ऊपर बताया गया है, आंकड़ों के अनुसार 50 % समलैंगिक बच्चे भी बाल यौन शोषण का शिकार होते हैं।

पिछले प्रश्न में बताये गए न्यू गिनी के उदाहरण के अनुसार बचपन में हुए यौन अनुभव से भविष्य में बच्चों की सेक्सुअलिटी पर कोई असर नहीं पड़ता है।

अमरीका के मनोवैज्ञानिक संस्थान ने सन 2000 के एक शोध पत्र में गे, लेस्बियन, ट्रांसजेंडर और बाइसेक्सुअल लोगों के बारे में तथ्यों को बताया

है। इसमें ये भी लिखा है कि बाल यौन शोषण का आंकड़ा स्ट्रेट और होमोसेक्सुअल दोनों तरह के बच्चों में बराबर है। इसका मतलब यह है कि बाल यौन शोषण से कोई भी होमोसेक्सुअल नहीं बनता।

इसका यह मतलब नहीं है कि बाल यौन शोषण का पीड़ित व्यक्ति पर कोई असर नहीं होता। असर काफी गम्भीर होता है और ये उस व्यक्ति के स्वाभिमान, आत्मविश्वास और चुनौतियों का सामना करने के सामर्थ्य को कमज़ोर करता है। होमोसेक्सुअलिटी से इसका कोई लेना देना नहीं है। बाल यौन शोषण से पीड़ित व्यक्ति दूसरे लोगों से अपनी बात कहने में, अपना प्यार जताने में और आकर्षित होने से डरते हैं। मगर वो किसकी तरफ आकर्षित होते हैं इसका इस डर से कोई सम्बन्ध नहीं हैं।

12. क्या बच्चों के दोस्त उन्हें होमोसेक्सुअल बनने के लिए प्रभावित कर सकते हैं?

अमरीका के प्रसिद्ध गे राइट्स एक्टिविस्ट ''हार्वे मिल्क '' ने एक बार इस सवाल का कुछ यूँ जवाब दिया– ''आप किसी को होमोसेक्सुअलिटी कैसे सिखा सकते हैं? क्या ये फ्रेंच भाषा की तरह है जिसे सिखाया जा सकता है? मैं अपने स्ट्रेट माता–पिता के साथ बड़ा हुआ, स्ट्रेट अध्यापकों ने मुझे पढ़ाया और मैं एक बेहद स्ट्रेट समाज में रहता हूँ। तो फिर मैं होमोसेक्सुअल क्यूँ हूँ?''

यह ज़्यादातर सभी बच्चों के लिए सत्य है। ज़्यादातर समलैंगिक बच्चे एक स्ट्रेट परिवार में बड़े होते हैं, स्ट्रेट वातावरण में पढ़ते और रहते हैं। उनके दोस्त, रिश्तेदार, जानने वाले ज़्यादातर लोग स्ट्रेट होते हैं। ऐसे माहौल में स्ट्रेट होना एक स्वाभाविक बात मानी जाती है। उदाहरण के तौर पर जब कोई व्यक्ति अपने बच्चों या फिर पार्टनर के बारे में बात

करता है तो उसे स्ट्रेट सेंस में ही लिया जाता है। यहाँ तक कि फिल्मों और धारावाहिकों में (जो कि हमें काफी हद तक प्रभावित करते हैं) भी स्ट्रेट थीम की कहानियां दिखायी जाती हैं। ऐसे में कोई होमोसेक्सुअल व्यक्ति इनसे प्रभावित क्यूँ नहीं होता? अगर आपका बच्चा लम्बे बच्चों के साथ रहने पर लम्बा नहीं हो सकता है या फिर गोरे बच्चों के साथ रहने पर गोरा नहीं तो फिर वह होमोसेक्सुअल बच्चों के साथ रहने पर होमोसेक्सुअल नहीं हो सकता है। यह एक जैविक और जेनेटिक स्तर पर रची हुई प्रकृति की संरचना है, इसे सीखा या प्रभावित नहीं किया जा सकता।

जैसे कि एक जैसा सोचने वाले लोग आपस में दोस्ती कर लेते हैं, उसी तरह काफी होमोसेक्सुअल बच्चे बड़े होने पर दूसरे होमोसेक्सुअल लोगों से दोस्ती करते हैं। मनुष्य एक दूसरे के साथ गुट में रहने वाला प्राणी है। वह अपने जैसे सोच विचार, हाव भाव वाले दूसरे लोगों के साथ रहना पसंद करता है (जैसे कि एक ही धर्म के लोग, एक जैसी जीवनशैली जीने वाले लोग, आदि)। खासकर इस संदर्भ में जब उनको समाज, परिवार आदि में अपने लिए भेदभाव दिखता है, तो वो उन लोगों से बातचीत करना चाहते हैं जो इसी तरह के वाकयों से गुज़र रहे हैं।

13. क्या हमको अपने बच्चे के पार्टनर को अपनाना चाहिए?

यह सवाल कुछ इस तरह का है कि यदि हम आपसे पूछें ''क्या हमें अपने बच्चे की खुशियों के कारण को अपनाना चाहिए''?
अगर आपका बच्चा स्ट्रेट होता/ होती और अपनी पसंद के लड़के/लड़की को आपसे मिलाने घर लाता/ लाती, क्या तब भी आप ये सवाल करते?

इस सवाल का जवाब पाने के लिए हमें समझना होगा कि हमारी ज़िन्दगी में हमारे पार्टनर/पति /पत्नी का क्या स्थान है।
यदि हमारे परिवार/ दोस्त हमारे पार्टनर/पति /पत्नी को अस्वीकारते हैं तो क्या हमें अच्छा लगेगा? आपको कैसा लगेगा यदि किसी पार्टी/ सोशल गैथरिंग में आप जाएँ और पाएं कि लोग आपके पार्टनर/पति /पत्नी को अवॉइड कर रहे हैं? क्या आप ऐसी जगह दुबारा जाना चाहेंगे?

प्रेम मानव चेतना के उच्चतम मूल्यों में सर्वश्रेष्ठ है। अध्ययन, प्रार्थना और प्रेम इन तीनों के लिए किसी को मजबूर नहीं किया जा सकता। हिंदी में एक कहावत है, ''पढ़ाई, पूजा और प्यार, किसी से कह कर नही करवाये जाते''. जब आपके बच्चे को लगने लगता है कि आप उसके जीवन के सबसे महत्वपूर्ण भाग को रिजेक्ट कर रहे हैं, उसे लगता है कि उसकी खुशी से आप खुश नहीं हैं और एक व्यक्ति के रूप में उसका अपमान कर रहे हैं, यह करने पर आप उससे ये कह रहे हैं कि आपको वो और उसके खुशी के पैमाने/ कारण अस्वीकार्य हैं।
प्रेम चाहे अपने माता–पिता के साथ हो या फिर अपने लवर के साथ, प्रेम के पैमाने एक जैसे होते हैं। जब आप अपने बच्चे की पसंद को नकारते हैं तो आप उसके साथ अपने रिश्ते पर एक दबाव डालते हैं। अगर आपको लगता है कि आपका अपने बच्चे के साथ रिश्ता आपके लिए महत्वपूर्ण है, तो आपको उसके रोमांटिक चुनाव के प्रति अपना रवैया बदलना होगा, यदि आप डाँट फटकार या उपहास का रवैया चुनते हैं, तो सबसे अधिक संभावना है कि आप उसको अपने जीवन से खुद ही दूर भगा देंगे।

इसका यह मतलब नहीं है कि आपको अपने बच्चे के हर चुनाव या निर्णय को अपनाना चाहिए। अगर आपको लगता है कि आपके बच्चे के चुने हुए पार्टनर में कुछ खामी है, या वो किसी भी तरीके से आपके बच्चे का पूरक नहीं है तो आप अपनी असहमति जता सकते हैं। उस परिस्थिती में

आपका बच्चा जानता है कि क्यूंकि आपने उसकी होमोसेक्सुअलिटी को एक्सेप्ट कर लिया है, आपकी यह असहमति उसकी खुशी के लिए है और आप अपने अनुभव से उसको एक सही सुझाव दे रहे हैं।

14. क्या अपने होमोसेक्सुअल होने की बात को छुपा कर नहीं रखना चाहिए? शायद लम्बे समय तक छुपाने से हमारे बच्चे की होमोसेक्सुअलिटी दब जाये/ निष्क्रिय हो जाये?

सबसे पहले यह समझें कि अपनी सेक्सुअलिटी को दबाने/ छुपाने से यह निष्क्रिय नहीं होती। यौन इच्छाओं को केवल आमतौर पर उम्र के साथ कम होता देखा गया है। जब तक आप एक सेक्सुअली एक्टिव इंसान हैं, आपकी सेक्सुअलिटी आपका एक हिस्सा है।

इस सवाल को समझने के लिए ज़रूरी है कि हम इसे इंडिविजुअल की 'पहचान' की दृष्टि से देखें। पहचान मनुष्य की विशिष्ट विशेषताओं से बनी हमारी इंडिविजुअल नेचर है। समलैंगिकता सहित कई मानव कंडीशंस को या तो हम बीमारी की तरह देखते हैं या फिर इसे एक पहचान के रूप में स्वीकारते हैं। आप अपने बच्चे की सेक्सुअलिटी को केवल इसलिए नहीं नकार सकते क्यूंकि आपका सेक्सुअलिटी के प्रति भावनात्मक अनुभव उससे अलग है। सिर्फ इसलिए आप इसे एक बीमारी नहीं कह सकते।

जब आप अपने बच्चे को उसकी सेक्सुअलिटी दबाने या छिपाने के लिए कहते हैं, आप मूल रूप उससे यह कहना चाहते हैं की उसकी होमोसेक्सुअलिटी को आप स्वीकार नहीं करते और आप उसके

होमोसेक्सुअल होने से शर्मिंदा हैं। आप उससे यह कह रहे हैं कि उसे अपनी सेक्सुअलिटी के बारे में समाज से छुपे रहना चाहिए।

कभी कभी माता–पिता सामाजिक उपहास या उत्पीड़न के डर से अपने बच्चे की सेक्सुअलिटी को समझना/ स्वीकारना नहीं चाहते। यह आम तौर पर उन देशों में अधिक होता है जहाँ समाज का हमारे पारिवारिक मामलों में दखल ज़्यादा है। भारत में भी कुछ क्षेत्र/ समुदाय दूसरों की तुलना में ज़्यादा समावेशी (उदार) हैं और कुछ कम। आपको शायद यह डर भी हो सकता है कि ऐसे समाज में अगर लोगों को आपके बच्चे के सेक्सुअलिटी के बारे में पता चल जाये तो वो उसे शारीरिक या मानसिक हानि पहुंचा सकते हैं।

शायद आपके बच्चे को पहले भी उसकी त्वचा के रंग, लंबाई, आदि के बारे में लोगों ने परेशान/ उपहास किया होगा क्यूंकि वो ''सामान्य'' नहीं है। इन सब चीजों पर आपके बच्चे का कोई नियंत्रण नहीं है। इनको लेकर जब उस समय आप अपने बच्चे को समझते हैं, प्रोत्साहित करते हैं और सांत्वना देते हैं तो अब इस बात को लेके क्यूँ नहीं? जब आपका बच्चा देखता है कि उसकी सेक्सुअलिटी छुपाने की जगह आप उसका साथ दे रहे हैं, उसको समझ रहे हैं तब उसकी नज़र में आपका स्तर और भी बढ़ जाता है।

अपने बच्चे की भलाई का सोच के, उसे किसी भी तरह के सामाजिक खतरे से बचाने के लिए जब आप उसे अपनी सेक्सुअलिटी को दबाने / छुपाने के लिए बोलते हैं, तब भले ही आपके डर बिलकुल सही हों, मगर इन डरों की वजह से आप उसको ज़िन्दगी भर दब के रहने के लिए नहीं बोल सकते। हमारे समाज में हम हर चीज में heterosexuality को

निहित मानते हैं। ऐसे में आपका बच्चा खुद को ईमानदारी के साथ खुले तौर पर अभिव्यक्त नहीं कर पाता। यह गलत है।

माता– पिता के रूप में, हमें अपने बच्चे को एक सच्चा जीवन व्यतीत करना और बिना किसी डर के अपने को अभिव्यक्त करना सिखाना चाहिए।

15. हम कुछ ऐसे लोगों को जानते हैं जो कुछ समय तक स्ट्रेट थे, फिर होमोसेक्सुअल और फिर स्ट्रेट। इसको आप कैसे समझा सकते हैं? क्या यह सिर्फ एक फेज है?

ओरिएंटेशन एक फेज नहीं है लेकिन लोगों का अपनी सेक्सुअलिटी को लेकर जो भ्रम है वो जरूर एक फेज है। यह भ्रम तब ज्यादा लगने लगता है जब आप समझना शुरू करते हैं कि आप बाकी लोगों से कुछ मामलों में अलग हैं और आपको खुद को समझने के बाद अपनी जिन्दगी उस हिसाब से जीनी पड़ सकती है। इस तरह के ज़्यादातर मामलों में, लोग वास्तव में बाईसेक्सुअल हो सकते हैं और bisexuality काफी भ्रम पैदा कर सकती है। हमारा समाज bisexuality को ओरिएंटेशन का हिस्सा नहीं समझता। लोग ज़्यादातर अपने जैसे लोगों के साथ उठते बैठते हैं। बाईसेक्सुअल लोगों को जब इसमें चुनाव करना पड़ता है तो एक भ्रम की स्थिती पैदा हो जाती है। लेकिन इससे ओरिएंटेशन पर कभी फर्क नहीं पड़ता।

लोगों के स्वभाव और ओरिएंटेशन में काफी फर्क होता है। कोई होमोसेक्सुअल इंसान दूसरे लिंग के व्यक्ति के साथ भले ही सेक्स कर ले, मगर इससे वो स्ट्रेट नहीं बन सकता। कई बार होमोसेक्सुअल लोगों को स्ट्रेट रिलेशनशिप में मजबूरी के कारण जाना पड़ता है। इसमें कई बार

वो अपनी सेक्सुअलिटी के साथ एक्सपेरिमेंट करने की भी सोच सकते हैं। यह एक टेम्पररी फेज है और इसके खतम होते ही व्यक्ति वापस अपने सही प्राकृतिक ओरिएंटेशन को अपना लेता है।

कई संगठनों ने ये दावा किया है कि वो होमोसेक्सुअल लोगों को स्ट्रेट बना सकते हैं। मगर ऐसे स्ट्रेट जोड़े कुछ समय बाद वापस अपने प्राकृतिक ओरिएंटेशन को स्वीकार कर लेते हैं। उनके ये दावे इसलिए झूठे साबित हो गए हैं।

कई लोगों में सेक्सुअलिटी एक बहाव की तरह होती है। यह उनके नेचर में है कि वो दूसरे लिंग/स्व लिंग के लोंगो के साथ रहना पसंद करते हैं। इसका ये मतलब नहीं है कि वो अपना ओरिएंटेशन बदल सकते हैं या फिर वो अस्थिर हैं। Bisexuality एक बहाव रूपी सेक्सुअलिटी का प्रकार है, इसका ये मतलब नहीं है की आपके बच्चे कि सेक्सुअलिटी भी ऐसी है। सेक्सुअलिटी एक इन्द्रधनुष की तरह है। जो लोग स्ट्रेट हैं वो एक तरफ हैं, जो लोग होमोसेक्सुअल हैं वो दूसरी तरफ, और बीच में भी कई लोग हैं।

16. मुझे मानसिक स्थिरता और खुशी पाने के लिए क्या करना चाहिए जब मुझे पता चले कि मेरा बच्चा होमोसेक्सुअल है?

आप मानसिक स्थिरता तभी पा सकते हैं जब आप खुश हों। इसी लिए अपने चाहनेवालों के साथ अपने रिश्ते मे स्थिरता पाने के लिए ये ज़रूरी है कि आप खुश हों। और खुशी कई व्यवहारिक तरीकों से पायी जा सकती है।

पहली चीज है ज्ञान। आप होमोसेक्सुअलिटी को समझने के लिए विश्वसनीय सूत्रों जैसे अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोशिएशन, विश्व साइकोलॉजिकल एसोशिएशन, इंडियन मेडिकल एसोशिएशन, आदि के शोध पत्र पढ़ें। इसके साथ ही दूसरे होमोसेक्सुअल बच्चों के परिवार से मिलें और उनसे डिसकस करें कि उन्होंने कैसे अपने बच्चे की होमोसेक्सुअलिटी को अपनाया है।

दूसरी चीज, अपने बच्चे से बिना किसी हिचक या पूर्वाभाव के बात करें। उससे पूछें की उसे क्या दिक्कत आती है। या फिर उसे किस चीज की ज़रूरत है। यह ज़रूरी है कि आप उसकी बात सुनें और उसे एब्नार्मल/बीमार न समझें।

तीसरी बात यह है कि आप उसके होमोसेक्सुअल होने के अर्थ और महत्व को समझें। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो अपने जीवन में अर्थ और उद्देश के माध्यम से खुशी प्राप्त करता है। उदाहरण के लिए डाउन सिंड्रोम के साथ पैदा हुए बच्चों की माँओं को बोला गया कि आप अपने बच्चे के डाउन सिंड्रोम से ग्रसित होने का अर्थ समझिये और उसकी ज़िन्दगी का महत्व समझिये। यह देखा गया कि जिन बच्चों की माओं ने यह समझा, 2 सालबाद उनके बच्चों का संतुलन बाकी डाउन सिंड्रोम ग्रसित बच्चों की तुलना से अधिक था। हम यह नहीं कह रहे हैं कि समलैंगिकता किसी भी तरह की एक बीमारी है। बल्कि हम यह कह रहे हैं कि माँ–बाप यदि बच्चे को अपनी उम्मीदों के अनुकूल नहीं पाते और यदि वो उनको समझने की कोशिश नहीं करते तो बच्चों की और उनकी खुद की बाकी ज़िन्दगी काफी मुश्किल हो जाती है।

एक और चीज जो आप एक अभिवाचक के रूप में कर सकते हैं वो यह है कि आप अपने बच्चे की सामाजिक परिस्थितियों में रक्षा करें, उसका साथ दें। आपको अपने बच्चे की होमोसेक्सुअलिटी के कारण समाज के सामने शर्मसार होने के कोई ज़रूरत नहीं हैं। आप जैसे अपने बच्चे को देखेंगे और उससे पेश आयेंगे वैसे ही समाज उसे देखेगा और पेश आएगा। इसलिए जब आप अपने बच्चे को प्यार और गरिमा के साथ ट्रीट करेंगे, आप समाज को ये दिखाएंगे कि आप अपने बच्चे को बीमार या एब्नार्मल नहीं समझते, समाज भी फिर आपके बच्चे को पूरी इज्जत और सम्मान देगा।

अन्त में, आप अपने बच्चे को प्यार ढूंढ़ने में मदद कर सकते हैं। इसका ये मतलब नहीं है कि आप पेपर में इश्तिहार दें बल्कि यह है कि आप उसकी पसंद को समझें, यदि आपको लगता है कि उसकी पसंद उसके लिए ठीक नहीं है तो उसे बताएं, नहीं तो उसके पार्टनर को पूरे प्रेम और इज्जत के साथ स्वीकार करें। इस पूरी प्रक्रिया में आप अपने बच्चे की खुशी को हमेशा ध्यान में रखें। यदि हम उसकी खुशी भूल जाते हैं तो उसका साथ विपरीत परिस्तिथियों में नहीं दे पाते हैं। जब आप अपने बच्चे की जिन्दगी की खुशी और स्थिरता का स्त्रोत खुद बनते हैं तो आप अपने में भी खुशी और स्थिरता पा जाते हैं।

17. मैं अपने बच्चे की शादी को लेकर बन रहे सामाजिक दबाव को कैसे झेलूं?

सबसे पहले आपके बच्चे सेक्सुअलिटी को लेकर समाज के रिएक्शन को समझते हैं। इस समाज में कई लोग ऐसे हैं जो हमारे काफी करीब हैं

और कई लोग नहीं हैं। इन करीब लोगों को हम ज़्यादा अच्छे से जानते हैं/वो हमे अच्छे से जानते हैं।

ये ज़रूरी है कि आप अपने बच्चे की होमोसेक्सुअलिटी को बिना शर्म के अपने जानने वालों में खुल कर बताएँ। जब आपके जानने वाले ये देखेंगे कि आपको खुद अपने बच्चे के होमोसेक्सुअलिटी से कोई परेशानी नहीं है तो उनको भी नहीं होगी। रही शादी की बात, तो आप उनसे ये बोल सकते हैं कि प्यार और शादी का जिम्मा आपके बच्चे का है क्यूंकि ये उसकी ज़िन्दगी के बारे में है और वो खुद इसके बारे में तय करेगा/करेगी।

अपने बच्चे को एक साथी खोजने में मदद करने के लिए सबसे पहले आप ये जान लें कि क्या वो अभी रिलेशनशिप में जाना चाहता है या नहीं। हो सकता है कि वो रिलेशनशिप में जाना चाहता हो मगर आपको इस प्रक्रिया में इन्वॉल्व नहीं चाहता हो। आप अभिभावक के तौर पर उसके चुनाव को अपनाएं और यदि आपको लगता है कि उसका चुनाव उसके लिए अनुकूल नहीं है तो उसे अपना सुझाव दें।

18. क्या किसी की जावनशैली (रहने सहने के तरीके) को स्वीकारना मगर उसे मंजूरी न देना सही बात है?

जीवन शैली चुनावों का सामूहिक रूप है जिनको हम अपनी ज़िन्दगी एक ढ़ंग से जीने के लिए करते हैं। क्यूंकि हम अपनी सेक्सुअलिटी को चुनते नहीं हैं इसलिए वो एक जीवनशैली का हिस्सा नहीं है। हालांकि एक होमोसेक्सुअल के तौर पर हम किस तरह से अपनी ज़िन्दगी जीते हैं ये ज़रूर जीवनशैली का हिस्सा है। स्वीकारना और मंजूरी देना दो अलग अलग बातें हैं। हम शायद दूसरे व्यक्ति की बातों आदि को भले ही

स्वीकार लें, मगर हम उनको मंजूरी दें यह जरूरी नहीं है। हालांकि स्वीकृति देना एक तरह से कुछ हद तक मंजुरी देना भी होता है।

हमको व्यक्ति और उसके व्यवहार के बीच अंतर समझना चाहिए। हम चाहे किसी के व्यवहार को नहीं स्वीकारें मगर हम उस व्यक्ति को अपना सकते हैं। व्यक्ति को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है।

निश्चितता

19. क्या ये मन का एक विचार है जो बदल सकता है?

या

20. क्या ये मन का एक छलावा है जो अपने को दूसरों से अलग साबित करने के लिए हमारा बच्चा सोचता है?

सेक्सुअलिटी को मन का छलावा समझने से पहले जरूरी है कि हम मन को समझें। मन आपके दिमाग में बनने वाली एक प्रक्रिया है। जीव विज्ञान के अनुसार दिमाग को कुछ आधार चाहिए होता है मन की भावनाओं को बनाने के लिए, खासकर सेक्सुअलिटी को लेकर। यह इसलिए कि हम कभी खुद decide नहीं करते कि हमें किस व्यक्ति या चीज की तरफ आकर्षित होना है। हमारा मन हमारे शरीर को बता देता है कि उसे आकर्षण महसूस करना है।

छलावे को समझने के लिए आपको एक example देते हैं। रेगिस्तान में कई बार मुसाफिर को रेत में पानी का छलावा दिखता है। जैसे जैसे वो उसके पास जाता है, उसे पता लगने लगता है असल में पानी नहीं है। हमारे दिमाग में एक बेहतरीन रक्षाण प्रणाली है जो हमें असली और नकली का अंतर बताती है।

होमोसेक्सुअलिटी को मन का भ्रम या छलावा कहना गलत है क्यूंकि लाखों लोग इसे अपने जीवन में हर दिन अनुभव करते हैं।

सेक्सुअलिटी पहले आपके जींस में और फिर आपके मन में एक पूरे प्राकृतिक तरीके से आती है। जिस तरह से इंसान रोटी, कपड़े और मकान (ज़रूरतों) के बारे में सोचता है, उसी तरह सेक्सुअलिटी के बारे में भी सोचता है। उसे भूख लगना जैसे सिखाया नहीं जा सकता वैसे ही उसे किसी की तरफ आकर्षित होना भी सिखाया नहीं जा सकता।

दूसरी बात कि आपका बच्चा अपनी उम्र के हिसाब से बागी या special दिखने के लिए होमोसेक्युअल बना है, ये भी गलत है। इंसान की एक मुख्य ज़रूरत ये भी होती है कि वो अपने को दूसरों से अच्छा दर्शाये, ऐसा करने से उसकी ज़रूरतों का दूसरे लोग ध्यान रखते हैं। माँ–बाप अगर जान जाएँ कि उनके बच्चे की कोई स्पेशल ज़रूरत है तो वो हर भरसक प्रयास करते हैं कि उसे वो मिले। होमोसेक्सुअलिटी को दुनिया में ज़्यादातर लोग तो स्वीकार ही नहीं करते इसलिए उस हिसाब से बच्चे स्पेशल बनने के लिए होमोसेक्युअल नहीं बनते। कौन बच्चा अपनी ज़िन्दगी में ताने, भेदभाव आदि झेलने के लिए खुद से होमोसेक्युअल बनना चाहेगा। यह एक प्राकृतिक चीज है और इसे सीखा नहीं जा सकता। होमोसेक्युअल लोग अपने सेक्सुअलिटी के बारे में लोगों को इसलिए बताते हैं क्यूंकि वो आपसे भावनात्मक सहारा मांगना चाहते हैं। आप अपने बच्चे को ये सहारा और ताकत दें और उसे judge न करें।

21. क्या ये इसलिए हो सकता है कि उसने अभी तक विपरीत लिंग के व्यक्ति के साथ सेक्स नहीं किया?

या

22. क्या वो इसलिए गे है क्यूंकि उसके आस पास कोई स्त्री नहीं है जो उसके साथ सेक्स कर सके? क्या हम उसको एक वैश्या के पास ले जाएँ, शायद उससे सेक्स करके वो स्ट्रेट बन जाये?

इसके जवाब को समझने के लिए सबसे पहले खुद से ये पूछें ''क्या मैं स्ट्रेट इसलिए हूँ क्यूंकि मैंने किसी स्व लिंग के व्यक्ति के साथ सेक्स नहीं किया है''? ज़ाहिर सी बात है कि ऐसा कुछ नहीं है। हम जब युवावस्था में प्रवेश करते हैं तो हम मानसिक और शारीरिक तौर पर लोगों की तरफ आकर्षित होने लगते हैं। ये आकर्षण हमको सिखाया नहीं जा सकता। इसलिए ये प्रक्रिया होमोसेक्सुअल और स्ट्रेट लोगों में समान है।

मास्टर्स एंड जॉनसन के विश्व विख्यात शोध पत्रों (मुख्यतः सेक्स एंड लविंग) के अनुसार वो व्यक्ति जिसने कभी सेक्स नहीं किया हो वो भी अपने को होमोसेक्सुअल समझ सकता है। और होमोसेक्सुअल लोगों में से कई को स्ट्रेट युगल आकर्षित करते हैं।

उनका ये आकर्षण दूसरे लिंग के व्यक्ति के पास न होने के कारण नहीं होता। इसको समझने के लिए situational होमोसेक्सुअलिटी को समझते हैं जिससे व्यक्ति सेक्स करना चाहता है मगर उसे फर्क नहीं पड़ता कि वो स्व लिंग के साथ करे या विपरीत लिंग के साथ। ये ज़्यादातर जेल, हॉस्टल, मिलिट्री आदि में देखा गया है। जब वो वापस अपने समाज, आदि में आता है तो फिर वो विपरीत लिंग के साथ सेक्स करता है जैसे कि पहले। यह होमोसेक्सुअल लोगों के साथ नहीं होता, वो केवल स्व लिंग की तरफ आकर्षित होते हैं, तब भी जब विपरीत लिंग के लोग पास हों।

दूसरी बात वैश्या के साथ सेक्स करवाने की। अगर उनको ये करना होता वो अब तक खुद ही ये कर लेते, आपको उन्हें वैश्या के पास ले जाने की नौबत ही नहीं आती। कुछ लोग ये भी सोचते हैं कि अगर दूसरे लिंग के साथ कोई होमोसेक्सुअल सेक्स कर ले तो वो स्ट्रेट बन सकता है क्यूंकि उसकी स्व लिंग के साथ सेक्स करने की इच्छा खतम हो जाती है। कई ऐसे होमोसेक्सुअल लोग हैं जिनको समाज और परिवार के दबाव के कारण शादी करनी पड़ी। वो शादी के बाद या तो स्व लिंग के लोगों के साथ छुप कर सेक्स करते हैं या फिर अपनी स्व लिंग की इच्छाओं पर पर्दा डाले रहते हैं। शादी के बाद पति/ बीवी के साथ सेक्सुअल रिश्ता सही से न निभा पाने पर भी पर्दा पड़ा रहता है।

आप जब किसी को बोलते हैं कि उसका होमोसेक्सुअल होना गलत है और आप उसे स्ट्रेट बनाने के लिए किसी भी हद तक जायेंगे तो आप उसके आत्मसम्मान को काफी चोट पहुंचाते हैं।

अगर आपको लगता है कि आपका बच्चा होमोसेक्सुअल है तो उससे बात करें। आपको पता चलेगा कि उसका और आपका अनुभव प्रेम, आकर्षण और सेक्स के प्रति एक जैसा है, केवल जेंडर का फर्क है।

23. क्या ये एक विदेशी इन्फ्लुएंस है? क्या ये ज़्यादा अंग्रेजी फिल्में देखने का नतीजा है?

जी नहीं। होमोसेक्सुअलिटी बिलकुल भी एक विदेशी इन्फ्लुएंस या इम्पोर्ट नहीं है। दुनिया के सारे कल्चर के इतिहास में होमोसेक्सुअलिटी के बारे में लिखा गया है। भारत के अधिकतर पौराणिक ग्रंथों में इसका हेट्रोसेक्सुअलिटी के साथ जिक्र है बिना किसी भेद भाव के।

भारत पर विदेशी शासन से पहले के समय के मंदिरों (खजुराहो, अजंता, एल्लोरा), या फिर आज से 800 साल पहले के मंदिरों की दीवारों को देखें। वहाँ हेट्रोसेक्सुअलिटी के साथ होमोसेक्सुअलिटी वाली कामुक मुद्राओं वाले चित्र मौजूद हैं।

यह एक तथ्य है कि दुनिया के किसी भी देश में होमोसेक्सुअल लोगों की संख्या उनकी जनसंख्या (लोग चाहे किसी धर्म, जाति या कल्चर के हों) का 5–10 % हिस्सा होती है। भारत में 25 लाख होमोसेक्सुअल लोग हैं। लोग होमोसेक्सुअलिटी को विदेशी इन्फ्लुएंस इस लिए समझते हैं क्यूंकि कई विदेशी मुल्कों में गे और लेस्बियन जनता ने अपने हक के लिए संघर्ष किया है। और उन मुल्कों ने उनकी भिन्नता को अपने कल्चर की एक विविधता के तौर पर अपनाया है। इसी संघर्ष के कारण इन देशों में होमोसेक्सुअल लोगों को शादी या सिविल पार्टनरशिप करने का अधिकार है। कई ऐसे देश भी हैं जहाँ होमोसेक्सुअल शादी या सिविल पार्टनरशिप की छूट नहीं है मगर वो इसे बुरा नहीं मानते और समर्थन करते हैं। इन देशों में होमोफोबिक भेदभाव के खिलाफ सख्त कानून है और ये देश बालिग लोगों के बीच होमोसेक्सुअल सेक्स को अपराधिक नहीं मानते।

मीडीया और हमारे देश का नया कल्चर हमारे समाज में होमोसेक्सुअलिटी के प्रति बदलते हुए रवैये को दर्शाता है। इसीलिए उसमें आप विदेशी मुल्कों में हुए होमोसेक्सुअलिटी को लेकर सामाजिक बदलावों को ज़्यादा देखते हैं। यही बदलाव आपको भारतीय मीडीया और फिल्मों में भी देखने को मिलेगा। आजकल के टीवी सीरियल और फिल्मों में होमोसेक्सुअलिटी से रिलेटेड काफी बोल्ड कहानियां/ सच्ची

घटनाओं को दिखाया/ डिसकस किया जाता है। इसका से मतलब नहीं है कि इसके जरिये लोगों को होमोसेक्सुअल बनने के लिए प्रभावित किया जाता है। होमोसेक्सुअलिटी जेनेटिक है और अगर उसके बारे में सोचने या होमोसेक्सुअल लोगों को मिलने से आप होमोसेक्सुअल बनते तो फिर आज हर वो इंसान जो सुपरमैन की कॉमिक्स पढ़ता या उसकी पिक्चर देखता है, वो सुपरमैन होता।

कला समाज के वर्तमान को दर्शाती है। हालाँकि मीडीया ने अभी से होमोसेक्सुअलिटी के बारे में एक पॉजिटिव तरीके से प्रोग्राम आदि पेश करने शुरू किये हैं, मगर ये भी सच है कि हमारे समाज में होमोसेक्सुअलिटी तब से है जबसे इतिहास लिखा गया था।

क्या बदलाव मुमकिन है?

24. क्या कोई ऐसी थेरेपी/ इलाज हैं जिससे मेरे बच्चे को वापस हेट्रोसेक्सुअल बनाया जा सके?

1990 में अमरीकन मनोवैज्ञानिक एसोसिएशन (APA) ने बताया कि वैज्ञानिक तरीकों के द्वारा ये साबित हुआ है कि reparative थेरेपी के इस्तेमाल से किसी की सेक्सुअलिटी नहीं बदली जा सकती। उन्होंने ये भी बताया कि ये थेरेपी किसी फायदे की नहीं है, बल्कि इससे काफी नुकसान होते हैं।

स्वभाव को बदलना और ओरिएंटेशन को बदलना दो अलग अलग चीजे हैं। स्वभाव को भले ये थेरेपी बदल दे मगर ओरिएंटेशन जैसी प्राकृतिक चीज जो आपके जीन्स में विद्यमान है, उसे बदलना किसी के हाथ में नहीं है। ओरिएंटेशन बदलने के लिए न सिर्फ आपको व्यक्ति की रोमांटिक, भावनात्मक और सेक्सुअल भावनाओं को बदलना होगा, बल्कि उसके आत्मसम्मान और आत्म पहचान को भी बदलना होगा। APA ने ये भी बताया कि वो संगठन जो इस तरीके की थेरेपी करते हैं उनका होमोसेक्सुअलिटी के प्रति वैचारिक क्लेश होता है। APA ने ''orientation reparative therapy'' (conversion therapy) को मान्यता देने से मनाकर दिया है।

कुछ संगठनों के द्वारा फैलाया हुआ प्रपंच कि उनकी थेरेपी से होमोसेक्सुअल लोग हेट्रोसेक्सुअल बन जाते हैं, सरासर गलत है।

जिन लोगों का ये उदाहरण देते हैं, वे लोग इस ट्रॉमेटिक थेरेपी से गुज़रने के समय कुछ समय तक हेट्रोसेक्सुअल बनने का स्वांग करते हैं मगर वापस अपने होमोसेक्सुअल जीवनशैली पर आ जाते हैं।

भावनात्मक स्थिरता और खुशी किसी भी व्यक्ति को एक भरपूर जीवन जीने के लिए ज़रूरी है। समलैंगिकता किसी भी व्यक्ति को अपने प्रति, अपने परिवार या समाज के प्रति अपनी निष्ठा, लगन या कार्य को करने से नहीं रोकती है। लेकिन अपने साथियों या परिवार द्वारा अस्वीकृति और कटाक्ष एक समलैंगिक व्यक्ति को काफी भारी मात्र में भावनात्मक आघात और पीड़ा पहुँचाते हैं। सामाजिक पूर्वाग्रह होमोसेक्सुअल लोगों को अत्यंत मनोवैज्ञानिक और अन्य क्षतियाँ पहुँचाती है।

उदाहरण के लिए, LGBT युवाओं के परिवारों के द्वारा उनको स्वीकृति के मुद्दे पर हुए सैन फ्रांसिस्को स्टेट यूनिवर्सिटी के एक अनुसंधान को देखते हैं। इस अनुसंधान में देखा गया कि जब हम उन LGBT युवा लोग, जिनको उनके परिवारों ने पूरी तरह से अस्वीकार दिया था, की तुलना उन LGBT युवा लोगों से करते हैं जिनको उनके परिवारों ने थोड़ा या पूरा स्वीकारा हुआ है, तो हम पाते हैं कि अस्वीकारे हुए LGBT युवाओं में:

- आत्महत्या का प्रयास करने की 8 गुना अधिक संभावना है.
- गभ्भीर अवसाद की 6 गुना संभावना हैं.
- अवैध ड्रग्स का उपयोग करने की 3 गुना संभावना है।
- HIV और अन्य STD रोगों के लिए 3 गुना उच्च जोखिम में होने की संभावना है।

हजारों तथ्य और वैज्ञानिक निष्कर्ष ये कहते हैं की होमोसेक्सुअलिटी को इलाज की ज़रूरत नहीं है क्यूंकि ये कोई बीमारी नहीं है। अभिभावक और साथी अपनी तरफ से ये कर सकते हैं कि वो अपने बच्चे/ मित्र को अपनाएं और उसका उसकी सेक्सुअल ओरिएंटेशन की वजह से तिरस्कार नहीं करें।

25. गे लोगों के लिए रिश्तों में रहना इतना मुश्किल क्यूं होता है?

रिश्ते कई कारणों से टूट सकते हैं। इन कारणों को मुख्यतः तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है

1. व्यक्तिगत
2. सामाजिक
3. पारिवारिक

समाज में जिन चीजों को स्वीकारा नहीं जाता या कोई मान्यता नहीं दी जाती वो चीजें हमें अपने लिए इतनी ज़रूरी नहीं लगती। अधिकतर गे लोगों में यह धारणा बहुत अधिक होती है कि उन्हें कभी प्यार नहीं मिल सकता या उनके रिश्ते लम्बे समय तक नहीं चल सकते। दूसरी ओर कभी कभी हमारी प्रेम की परिभाषा, किस्से कहानियों से इतनी प्रभावित हो जाती है की हम उस घोड़े पे आने वाले राजकुमार के इन्तजार में ही बैठे रह जाते हैं और अपने आस पास के लोगों पर ध्यान ही नहीं देते। ऐसे काल्पनिक प्रेम की चाह में गे लोग अपने मौजूदा रिश्तों में खामियाँ ढूंढ़ने लगते हैं। और कुछ गे लोग संबंधों में चोट खाने के बाद अपने आप को प्रेम के काबिल ही नहीं मानते।

चूँकि गे रिश्तों को अधिक समझने के लिए हमारे पास ऐसे उदाहरणों की कमी है इसलिए हम एक गे रिश्ते को एक स्त्री–पुरूष के रिश्ते की कसौटी पर तोलते हैं। एक गे रिश्ता सम्भवतः एक स्त्री–पुरूष के रिश्ते से अलग होता है, उसकी अपनी अलग चुनौतियाँ होती हैं, अतः एक सफल गे रिश्ते की तुलना एक स्त्री–पुरूष के सफल रिश्ते से करना कहीं न कहीं सही नहीं है। यह तुलनात्मक अध्ययन भी गे रिश्तों में आने वाली खटास का कारण है।

गे रिश्तों पर हुए कई अध्ययनों में पाया गया है कि गे रिश्ते टूटने के ज़िम्मेदार बाहरी कारण हैं। सैन डिएगो विश्वविद्यालय द्वारा कराये गए एक शोध में दस सालों तक 10000 गे जोड़ों तथा उनके ऐसे भाई बहनों के जोड़ों का अध्ययन किया गया जो कि गे नहीं थे। इस अध्ययन के चौंका देने वाले परिणाम यह थे कि हर माप दंड पर गे जोड़े अपने भाई बहनों से ज़्यादा खुश थे। न सिर्फ गे जोड़ों में अधिक आत्मीयता पायी गयी बल्कि दूसरे स्त्री–पुरूष जोड़ों से कम मन मुटाव भी देखा गया।

लेकिन स्त्री–पुरूषों के जोड़ों के टूटने की सम्भावित दर केवल 2.7 प्रतिशत मापी गयी जबकि एक ''सिविल युनियन'' में बंधे गे जोड़ों के टूटने की संभावित दर 3.8 प्रतिशत थी और ऐसे गे जोड़े जो कि ''सिविल युनियन'' में नहीं बंधे हैं, उनके टूटने की सम्भावित दर 9.3 प्रतिशत मापी गयी।

यह आंकड़े आपको विरोधाभास ज़रूर कराएँगे परन्तु अध्ययन के अनुसार एक स्त्री पुरूष के रिश्ते के लम्बे समय तक चलने के ज़िम्मेदार बाहरी कारण हैं, जैसे कि – पारिवारिक दबाव, बच्चे, लोन जैसे आर्थिक कारण– और न कि रिश्ते की आत्मीयता व खुशी। एक गे रिश्ते की

बुनियाद मुख्यतः आत्मीयता व खुशी ही होती है। बहुत कम गे रिश्तों में बच्चों की सम्भावना व करीबी पारिवारिक रिश्ते देखे जा सकते हैं।

अध्ययन एक ओर मुख्य कारण पर प्रकाश डालता है कि संवैधानिक मान्यता किसी भी रिश्ते को मजबूती से जोड़ने के लिए एक गोंद का काम करती है, फिर चाहे वो शादी की वैधानिकता हो या ''सिविल युनियन''। समय के साथ इन बाहरी कारणों में भी बदलाव आ सकता है। परन्तु गे जोड़े जो निरंतर परिस्थितियों से जूझते रहते हैं, थक कर, आम तौर पर अलग होने की आसान राह चुन लेते हैं।

इन बाहरी कारणों पर हमारा बस नहीं चल सकता, परन्तु आप अपने बच्चों को एक अच्छे माता–पिता होने का उदाहरण जरूर दे सकते हैं। अपने बच्चों को एक ऐसा वातावरण दें जिसमें उन्हे अपने रिश्ते चुनने की आज़ादी हो। उनके रिश्तों को ना सिर्फ अपने पारिवारिक माहौल में अपनायें बल्कि उन्हें विकसित करने के लिए प्रोत्साहित भी करें। यदि किसी कारणवश आपके बच्चे के रिश्ते में दरार आ गयी है तो उस समय प्यार व सहानुभूति से स्थिती को संभालें। इस मुश्किल समय में अपने बच्चे के साथ खड़े हो कर उसे साहस दें ताकि वो अपने आपको संभाल पाये और प्यार जैसे सुखद एहसास पर से भरोसा भी न खोये।

26. न उसके हाव भाव, न चाल, कुछ भी महिलायों जैसे नहीं हैं फिर वो गे कैसा हो सकता है?

अलग अलग आकार प्रकार के इंसान दुनिया को रोचक बनाते हैं। अलग अलग दिलचस्पी व व्यक्तित्वों के मेल स्वरूप इंसानी दुनिया का विकास हुआ है। LGBT समुदाय के लोग भी अछूते नहीं हैं। कुछ गे लोगों के

हाव भाव एवं बर्ताव अपने से दूसरे सेक्स के लोगों जैसे हो सकते हैं। परन्तु यह ज़रूरी नहीं कि ऐसे हाव भाव वाले इंसान गे ही हों।

आपको कई स्त्रियां ऐसी मिलेंगी जिनका पालन पोषण एक लड़के के समान हुआ है। जबकि उनके बर्ताव में बहुत सारी बातें लड़कों जैसी पायी जाती हैं परन्तु हम लोग उन्हें गे या समलैंगिक नहीं कह सकते। उन्हें आम भाषा में ''tom boy'' ज़रूर बोला जाता है। इसी प्रकार कई आदमियों की आवाज़ बहुत बारीक, लड़कियों जैसी होती है, परन्तु ऐसे लक्षण उन्हें गे नहीं बनाते। भिन्न भिन्न प्रकार के लोग, इंसानों की विभिन्नता को दर्शाते हैं। इन भिन्नताओं को किसी व्यक्ति की लैंगिगकता से जोड़ना गलत होगा।

कुछ लोगों का मानना है कि गे लोग अधिकतर पिंक रंग के कपड़े पहनते हैं। कुछ लोगों का मानना है किरचनात्मक कार्यों में ज़्यादातर गे लोग कार्यरत होते हैं। क्या इसका यह मतलब माना जाये कि लैंगिगकता कपड़ों, रंगों, कार्यों से परिभाषित की जा सकती है। किसी भी समुदाय के लोगों को इस तरह से एक ढांचे में ढालना गलत होगा। आज जब समाज समलैंगिकता को स्वीकार कर रहा है तो कुछ गे लोग अपने व्यक्तित्व को एक अलग पहचान देने के लिए अलग तरह के कपड़े पहनते हैं। इस तरह के कपड़ों से वो यह दर्शाना चाहते हैं कि वो रूढ़िवादी सामाजिक दायरों एवं बंधनों से परे हैं। कुछ लोग अपने व्यक्तित्व की अभिवयक्ति के लिए कपड़ों को एक साधन मात्र मानते हैं। क्यूंकि हमारे समाज में गे लोगों के लिए कोई आदर्श नहीं हैं, अतः कभी कभी उन्हें लगता है कि इस तरह के हाव भाव से या कपड़े पहनने से उनकी पहचान बनती है।

आज अधिक से अधिक युवा अपनी पहचान को लेकर सुरक्षित हैं। वे ज़बरदस्ती इस तरह के कपड़ों या हाव भाव से अपने आप को दर्शाने का पर्यत्न नहीं करते।

धर्म

27. क्या गे होना धर्म के ख़िलाफ़ नहीं है?

संसार के अलग अलग धर्म अलग अलग चीज़ों व मान्यताओं के खिलाफ़ हैं। कुछ धर्मों में दो अलग अलग तरह के तंतुओं से बने कपड़े पहनना मना है, कुछ धर्मों के अनुसार औरतों व कुछ अन्य संप्रदाय के लोगों को इंसानों जैसे अधिकार नहीं मिलने चाहिए। कुछ धर्मों के अनुसार कुछ खाने वाले पदार्थों पर प्रतिबन्ध है। जबकि कुछ के अनुसार कुछ खाने वाली चीज़ों का हम पर गलत प्रभाव होता है। एक धर्म मीट खाने से मना करता है, दूसरा एक किस्म का मीट खाने से मना करता है। जो लोग मीट खाते हैं या दूसरे किस्म के मीट खाते हैं क्या वो सभी पापी या भ्रष्ट होते हैं?

यदि हम धर्म की परिभाषा समझने की कोशिश करें तो हमें पता चलेगा कि धर्म के विकास में एक बहुत बड़ा हाथ हमारे पर्यावरण का है। इसका एक उदाहरण यह है कि कई धर्मों में बारिश को एक दैवीय चमत्कार माना जाता था। अलग अलग धर्मों में बारिश के अलग अलग देवता पूजे जाते थे। परन्तु यदि आज आप अपने बच्चे को बारिश के बारे में समझायेंगे तो आप उसे वैज्ञानिक तर्क देंगे न की धार्मिक दृष्टिकोण।

पुराने ज़माने में जनसंख्या कम होने के कारण व साधनों के अभाव के कारण समलैंगिकता को अधिक बढ़ावा नहीं दिया जाता था। क्यूंकि समलैंगिकता परिवार व जनसंख्या को बढ़ाने में कोई योगदान नहीं कर पाती। आज कई वैज्ञानिक समुदाय समलैंगिकता को इंसानी परिवेश का एक हिस्सा मानने लगे हैं। अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप वैज्ञानिक तर्कों को मानें या पौराणिक कथाओं को।

यह आप को सोचना है कि धर्म को अपने रिश्तों पर कितना हावी होने देना चाहेंगे। वो रिश्ता आपका अपने साथ हो सकता है या आपके दोस्तों और परिवार वालों के साथ।

28. मेरा बच्चा गे होने के बावजूद भगवान को मान सकता है क्या?

भगवान को मानना और गे होना यह बिलकुल अलग अलग चीज़ें हैं। आप इन दोनों में कोई तालमेल नहीं ढूंढ़ सकते। जैसे भगवान को मानना और एक अच्छा व्यक्ति होना दो अलग अलग बातें हैं। बहुत से लोग हैं जो भगवान को नहीं मानते लेकिन वो गे नहीं हैं। इसी तरह से बहुत से लोग भगवान को मानते हुए भी ज़िन्दगी में गलत काम करते हैं। इसलिए आप भगवान को मानने और गे होने में कोई रिश्ता नहीं ढूंढ़ सकते।

एक इंसान की ज़िन्दगी में भगवान को मानना या ना मानना उसका निजी फैसला होता है, इस फैसले को उसकी लैंगिगकता से जोड़ना गलत होगा। यदि आपके हिसाब से भगवान को मानने का अर्थ एक तरह का दिखावा है तो वो कहीं कुछ गलत होगा। भगवान हमें यह नहीं बताता कि आप किस तरह की चीज़ें खायें या ना खायें, वो हमें यह भी नहीं बताता कि हमें किस से प्यार करना चाहिए या किस से नहीं करना चाहिए। इन चीज़ों में उलझ कर आप भगवान से नहीं मिल सकते। भगवान एक शक्ति है जिसे हम अपने अंदर महसूस कर सकते हैं। और आपका गे बच्चा भी उस शक्ति को न सिर्फ महसूस कर सकता है बल्कि भगवान में पूरी आस्था रख सकता है।

29. अगर सब लोब गे बन गए तो क्या समाज का अंत नहीं हो जाएगा? सेक्स तो बच्चे पैदा करने के लिए ही होता है न?

ये एक काफी प्रचलित मिथ्या है। होमोसेक्सुअलिटी एक प्राकृतिक विविधता है जो हमारे जीन्स में कोडेड है। इस प्रकृति के हर प्रजाति में 5–10% होमोसेक्सुअल संख्या होती है। भले वो पेड़ पौधे हों, जानवर, चिड़िया या मनुष्य। बाकी 90–95 % संख्या हेट्रोसेक्सुअल होती है इसलिए समाज का अंत तो एक कल्पना ही है।

यदि बड़ी मात्रा में समाज में होमोसेक्सुअल लोग होंगे, इसका ये मतलब नहीं है कि इससे समाज का अंत हो जायेगा। होमोसेक्सुअल युगल बच्चे पैदा करने के लिए surrogacy आदि तरीकों को अपनाते हैं। कई गे और लेस्बियन युगल आपस में मिलकर बच्चे पैदा करते हैं। और उनका पालन पोषण करते हैं।

समाज में होमोसेक्सुअल लोगों को उनके अधिकार देने से बाकी होमोसेक्सुअल नहीं बन जायेंगे। मगर ये करने से होमोसेक्सुअल लोगों की ज़िन्दगी ज़रूर सुधर जायेगी। इसके साथ ही अगर होमोसेक्सुअल लोगों को एडॉप्शन का अधिकार दिया जाता है तो उनके परिवार बस जायेंगे और कई लाख अनाथ बच्चों को अभिभावक मिल जायेंगे।

रही बात सेक्स और बच्चे उत्पन्न करने की। क्या आपको वास्तव में लगता है कि मनुष्य सेक्स केवल बच्चे पैदा करने के लिए करता है? मनुष्य खुद से शारीरिक रूप से करीब आने के लिए और मनोरंजन के लिए भी करता है। अगर सेक्स केवल बच्चा पैदा करने लिए ही करना सही है तो फिर कंडोम, जन्म नियंत्रण की गोली, परिवार नियोजन इन सबका क्यूँ आविष्कार और फिर इस्तेमाल हो रहा है? क्या हेट्रोसेक्सुअल लोग केवल बच्चे पैदा करने के लिए सेक्स करते हैं?

बच्चे अपनाना/ पैदा करना एक बड़ा ही व्यक्तिगत चुनाव है जो कि व्यक्ति खुद से या फिर अपने प्रेमी के साथ मिल के करता है। कुछ लोग बच्चे अपनाते/ पैदा ही नहीं करते। अगर नपुंसक लोग या फिर हेट्रोसेक्सुअल जोड़े जो बच्चे नहीं चाहते, उनको सेक्स करने पर कोई पाबन्दी नहीं है तो फिर होमोसेक्सुअल लोगों पर ये पाबन्दी हम क्यूँ लगाना चाहते हैं।

हेट्रोसेक्सुअल लोगों के साथ सम्बन्ध

30. हेट्रोसेक्सुअल लोगों के साथ इसके कैसे सम्बन्ध होंगे? क्या ये लड़के/ लड़कियों को नफरत करती/ करता है?

पहले आप ये बताएं कि आप किस सम्बन्ध की बात कर रहे हैं? रोमांटिक या सेक्सुअल? वास्तव में ये दोनों मुमकिन नहीं हैं, हालाँकि अगर वो bisexual है, तो पॉसिबल है। सेक्सुअलिटी का दोस्त बनाने से केवल इतना ही रिश्ता है कि आपका बच्चा गे फ्रेंडली लोगों से दोस्ती रखेगा क्यूंकि वो उनके साथ सुरक्षित महसूस करेगा। हम उन्ही लोगों से दोस्ती करना चाहते हैं जिनके साथ हम सुरक्षित महसूस करें, जिनमें समान आचार विचार हों, उनकी खूबियां हमें भायें और जिनको हमारी परवाह है।

अगर आप स्ट्रेट हैं तो क्या आप स्व लिंग के व्यक्तियों को नफरत करते हैं? क्या हम उन्ही लोगों से बात करते हैं जिनसे हम सेक्स करना चाहते हैं? या फिर केवल उन लोगों से जिनकी तरफ हम रोमांटिक तरीके से आकर्षित होते हैं? हम भिन्न कारणों से लोगों में रूचि लेते हैं। मगर किसी भी रिश्ते की बुनियाद होती है कि हम दूसरे के साथ कितना अपनापन महसूस करते हैं, वो हममें कितनी रूचि दिखाते हैं, वो हमें स्वीकार करते हैं कि नहीं, और उनमें और हममें कितने कॉमन इंटरेस्ट हैं। क्या आप किसी से इसलिए नफरत कर सकते हैं क्यूंकि उसकी आँखों का रंग अलग है? उसी तरह किसी के जेंडर या सेक्सुअलिटी को लेकर फर्क/ नफरत करना गलत है क्यूंकि वह प्राकृतिक है और उसपर किसी का कोई नियंत्रण नहीं है। हम तभी किसी से नफरत करते हैं जब हमारे आचार विचार या जीवनशैली उससे नहीं मिलते। इसी तरह से

यदि हमें किसी में कोई सेक्सुअल इंटरेस्ट नहीं है तो हम उसको उसके जेंडर की वजह से नफरत नहीं करते।

इस पर विचार करें।

31. लेकिन मेरा बेटा स्कूल और कॉलेज में कई लड़कियों से बात करता था और आज भी कई लड़कियों से उसकी दोस्ती है। इसके बारे में आपका क्या कहना है?

क्या समान लिंग के लोगों से आपकी दोस्ती है? अगर हाँ, तो क्या ऐसा इसलिये है कि आप उनकी और यौन आकर्षण रखते हैं? जैसा कि हमने पिछले प्रश्न में बताया, किसी व्यक्ति से दोस्ती के लिये उसकी ओर शारीरिक रूप से आकर्षित होना या प्रेम भाव रखना आवश्यक नहीं है। हम उनसे दोस्ती करते हैं जिनके साथ हम अच्छा महसूस करते हैं या जो हमारे जैसे होते हैं, और संभव है कि कोई समलिंगी पुरुष किसी सामान्य महिला के साथ सहज महसूस करे, जिसके प्रति उसे शारीरिक आकर्षण न हो, और जिनमें उनके आकर्षण का कोई एक आम पहलू मौजूद हो। इसी प्रकार कोई सामान्य महिला किसी समलिंगी पुरुष की करीबी हो सकती है क्योंकि उन्हें ऐसे पुरुषों से कम खतरा महसूस होता है जिनकी उनमें लैंगिक दिलचस्पी नहीं है और न ही वे उनके प्रेम या शारीरिक संबंध बनाना चाहते हैं।

इसका यह मतलब भी नहीं है कि सभी समलिंगी पुरुषों की महिलाओं से घनिष्ठ मित्रता होती है। कुछ सामान्य पुरुषों के भी करीबी दोस्त हो सकते हैं, लेकिन किसी के साथ दोस्ती, किसी के प्रति यौन आकर्षण का प्रमाण नहीं होती।

समलैंगिकता और समाज

32. क्या होमोसेक्सुअलिटी हमारे समाज और नैतिकता के लिए खतरा नहीं है?

सबसे पहले समझते हैं कि ''खतरा'' शब्द का क्या मतलब होता है। खतरा मतलब कोई ऐसी चीज़/ वाकया जिसकी वजह से किसी इंसान की आज़ादी पर बंदिश आती हो या फिर देश के ऊपर राजनीतिक संकट आता हो। देश के सामाजिक और नैतिक धरोहर को तो खतरा तभी होगा जब होमोसेक्सुअल लोगों को अपनाने से आपकी आज़ादी पर बंदिश आती हो या देश पर कोई संकट आता हो। इस केस में यह बात तो बिलकुल भी लागू नहीं होती है। बल्कि होमोसेक्सुअल लोगों को अपनाने से उनको भी वो सब अधिकार मिलते हैं जो हेट्रोसेक्सुअल लोगों को मिलते हैं जिससे वो भी एक भरपूर ज़िन्दगी जी सकते हैं। एक ऐसी ज़िन्दगी जिसमें उनको कोई बंदिश नहीं होती है कि वो किससे प्यार करें और किसके साथ जीवन बसर करें।

अगर गे लोगों को आपस में शादी करने का अधिकार मिलता है तो इसका मतलब यह है कि उनको अपने मन पसंद जीवन साथी के साथ एक भरपूर शादी शुदा जीवन बिताने की आज़ादी है। इसका ये मतलब नहीं है कि ये करने से समाज में लोगों को होमोसेक्सुअल लोगों के साथ शादी करने के लिए मजबूर किया जायेगा।

ज़रा सोचिये, अगर कल कोई आपके धर्म पर बंदिश लगा दे और आपको बोले कि आप अपने धर्म को नहीं मान सकते, आपको कैसा लगेगा? क्या आपको तब नहीं लगेगा कि आपकी सामाजिक और नैतिक धरोहर खतरे

में है? उसी तरह से लोगों से उनकी इंसानी आज़ादी को दूर रखना हमारे समाज और नैतिकता के लिए खतरा है।

33. गे लोग क्यूँ अपने माँ बाप को शर्मिंदा करते हैं? क्या आप अपने माँ बाप को खुश नहीं देखना चाहते?

शर्म वो अनुभव है जो हमको तब आता है जब हमें लगता है कि हमने समाज के मुताबिक कोई काम नहीं किया। शर्मसार करना एक ऐसा अनुभव है जो दूसरे आपको नीचा दिखाने के लिए करते हैं। जब आप कहते हैं कि आपके बच्चे ने आपको शर्मसार किया है तो आप सोच लेते हैं कि आपका बच्चा आपको जानबूझ कर शर्मसार कर रहा है। लेकिन जब होमोसेक्सुअल बनना उसके हाथ में ही नहीं है तो फिर वो आपको कैसे शर्मसार कर सकता है।

एक उदाहरण लीजिये। सोचिये कि आपके बच्चे के इम्तिहान में 99 % नंबर आये। आप बड़े खुश होते हैं क्यूंकि उसने समाज के सामने बड़ा अच्छा काम किया है, हालाँकि ये नंबर न तो उसके सुखद भविष्य के बारे में पूरी गारंटी दे सकते हैं न ही उसकी खुशी के बारे में। दूसरी तरफ ये भी सोचिये कि क्या कोई माँ–बाप अपने काले, भद्दा दिखने वाले बच्चे को लेकर सोचते हैं कि वो उनको शर्मसार करता है? होमोसेक्सुअलिटी भी उसी तरह आपके बच्चे के कण्ट्रोल से बाहर है जैसे उसके बाल का रंग या फिर उसकी लम्बाई।

अगर आप सोचते हैं कि आपके बच्चे की होमोसेक्सुअलिटी उसका आपको शर्मसार करने का तरीका है तो फिर ये बात एक हीन भावना के रूप में बच्चे को अंदर से कचोटने लगती है और उसका आत्म सम्मान

धीमे धीमे कम होने लगता है। अगर आप अपने बच्चे की सेक्सुअलिटी से शर्म खाते हैं तो सबसे पहले खुद से पूछिए कि आपको शर्म किस बात से आ रही है। जब आप ये समझ जायेंगे की यह शर्म खाने लायक कोई चीज़ नहीं है तब आप अपने बच्चे को अच्छे से समझने लगेंगे और खुश रहेंगे।

34. ये मेरा एकलौता बच्चा है। मेरे परिवार के नाम का क्या होगा, मेरा वंश कैसे आगे बढ़ेगा?

आपका बच्चा होमोसेक्सुअल है इसका ये मतलब नहीं है कि वो बच्चे पैदा नहीं कर सकता/नपुंसक है। आपका बच्चा किसी को अडॉप्ट कर सकता है, surrogate प्रक्रिया से बच्चा पैदा कर सकता है, नहीं तो दूसरे लेस्बियन युगल के साथ मिल के एक माँ–बाप की तरह बच्चे को पाल सकता है। ऐसे कई और तरीकों की कमी नहीं है। आपको बस अपने दिमाग से ये खयाल निकलना होगा कि आपके पोता/ पोती/नाती/ नतनी परंपरागत तरीके से पैदा होंगे। ये सारे तरीके आपके बच्चे के पास स्ट्रेट होने पर भी होते।

अगर आप अपने बच्चे पर परंपरागत तरीके से बच्चा पैदा करने का दबाव डालते हैं तो सम्भव है कि वो आपसे दूर चला जाए। इसलिए ये ज़रूरी है कि आप उसे भरोसा दिलाएं कि आप उसके साथ हैं। आपका बच्चा फिर समय देख कर तय करेगा कि उसे कब पिता/ माता बनना है और उसके बारे में कार्य करेगा।

35. सेक्सुअलिटी की वजह से क्या मेरे और मेरे बच्चे के रिश्ते में कोई दिक्कत आ सकती है? क्या वो मुझे छोड़ कर चला जायेगा/ जायेगी?

आपको ये समझना चाहिए कि आपका बच्चा शुरू से ही होमोसेक्सुअल है, बस आपको इस बात का पता नहीं था। इसलिए उसका होमोसेक्सुअल होना आपके और उसके बीच के रिश्ते को कम नहीं कर सकता। रिश्ते एक दूसरे के साथ अच्छे से रहने से बनते हैं, न की ओरिएंटेशन की वजह से।

उदाहरण के लिए, अगर कोई आपको अपने बारे में कोई अच्छी बात बताता है जैसे कि वो दूसरी भाषा सीख रहा है, या फिर कोई और बात, तो आप उसकी सराहना करते हैं। मगर वो व्यक्ति अगर आपको ये बताता है कि उसने कोई बुरा काम किया है या फिर वो जातिवाद को मानता है, आदि, तो आप उसे पसंद करना बंद कर देते हैं/ कम संपर्क रखते हैं। इसीलिए आपके बच्चे और आपके बीच का रिश्ता इस बात पर निर्भर करता है कि आप उसके होमोसेक्सुअल होने को किस तरीके से लेते हैं।

रही आपके इस बात पे परेशान होने की बात कि आप अकेले रह जायेंगे, यह बिलकुल भी सही नहीं है। अगर आपका बच्चा आपको प्यार नहीं करता और आपको अपनी ज़िन्दगी का अभिन्न हिस्सा नहीं मानता तो क्या वो आपको अपने होमोसेक्सुअल होने के बारे में (जो उसकी ज़िन्दगी का एक मुख्य सत्य है) बताता? असली बात तो ये है कि इस मोड़ पर वो इस बात को लेकर परेशान हो सकता है कि क्या आप उसे ये जानने के बाद छोड़ देंगे। आपको उसे बताना चाहिए कि आपका और उसका रिश्ता उतना ही पुख्ता और मज़बूत है जैसे कि पहले था। उसे समझने में शायद थोड़ा टाइम लगे मगर अगर आप उसे आश्वासन देंगे कि आप उसे समझने का प्रयास करेंगे और होमोसेक्सुअलिटी को लेकर अपने निग्रह को दूर करेंगे तो वह सुरक्षित महसूस करेगा।

36. मेरा बच्चा एक सफल जीवन कैसे जी सकेगा? क्या उसकी शादी शुदा ज़िन्दगी सफल रहेगी?

इस सवाल का जवाब देने के लिए ये जानना ज़रूरी है कि आप सफलता को किस पैमाने पे तौलते हैं। यदि आप कहते हैं कि सफलता का मतलब यह है कि आपके बच्चे को बीवी/ पति, बच्चे, ख्याति, पैसा आदि मिले तो शायद आपका बच्चा आपकी इस उम्मीद पर खरा नहीं उतरेगा। आपको ये जानना ज़रूरी है कि सफलता और खुशी दो अलग चीज़ें हैं। सारे सफल लोग खुश हों इसकी कोई गारंटी नहीं है न ही इसका उल्टा सही होता है। आपका बच्चा अपनी क़ाबिलियत के अनुसार शायद सफल हो पाये या नहीं, मगर वो खुश ज़रूर रह सकता है, जब उसे आप एक अच्छा पारिवारिक माहौल देते हैं। एक खुश इंसान की सफल होने की ज़्यादा सम्भावना है। उसकी सेक्सुअलिटी उसको सफल होने से नहीं रोक सकती, मगर एक अप्रसन्न पारिवारिक ज़िन्दगी ज़रूर रोक सकती है।

होमोसेक्सुअलिटी या हेट्रोसेक्सुअलिटी का जीवन में सफलता से कोई लेना देना नहीं हैं। क्या हेट्रोसक्सुअल लोग असफल नहीं होते? भारत और पूरे विश्व में सफल होमोसेक्सुअल लोग विद्यमान हैं। विश्व प्रसिद्ध गायक रिकी मार्टीन, फैशन ड़िजाइनर रोहित बाल, राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त किए डायरेक्टर ओनिर उनमें से कुछ हैं। ऐसे हज़ारों होमोसेक्सुअल लोग हैं जिन्होंने अपनी ज़िन्दगी में सफलता हासिल करी है। आपका बच्चा भी उनकी तरह सफल बन सकता है।

रही बात एक खुशनुमा शादी शुदा ज़िन्दगी जीने की। आपका बच्चा ऐसी ज़िन्दगी तभी जी सकता है जब वो उससे शादी कर पाये जिससे वो प्यार

करता है और जिसके साथ वो खुश रहता है। इस केस में वह एक स्व लिंग का व्यक्ति होता है।

हेट्रोसेक्सुअल शादियां भी टूटती हैं और मुख्य कारण होता है असंतोष और प्रेम का अभाव। अगर आप अपने बच्चे की ज़बरदस्ती दूसरे लिंग के व्यक्ति के साथ शादी रकवा देंगे तो ये जान लें कि वो दोनों चाहे कितने भी अच्छे दिखें साथ में, मगर वो खुश कभी नहीं रहेंगे। दूसरी तरफ अगर वो अपनी मर्ज़ी के व्यक्ति से शादी करते हैं, चाहे वो किसी भी जेंडर का हो, वो खुश रहेंगे।

37. क्या इस तरीके की जीवनशैली खतरनाक नहीं होती?

होमोसेक्सुअलिटी को जीवनशैली की उत्पत्ति बताना एक सरासर गलत बात है। हमने पहले भी ये बोला और साबित किया है कि होमोसेक्सुअलिटी सिखाई नहीं जा सकती बल्कि ये एक बच्चे के अंदर उसके पैदा होने से पहले जेनेटिक लेवल पर पैदा होती है, जैसे बालों का रंग, लम्बाई, आदि। इस बात को साबित करने के लिए हज़ारों वैज्ञानिक शोध आदि भी मौजूद हैं।

दूसरी चीज़ ये है की आपका ये सोचना कि सारे होमोसेक्सुअल लोग आत्मघाती जीवनशैली जीते हैं, ये गलत है। ये सच है कि कुछ लोग शराब, ड्रग्स आदि का नशा करते होंगे मगर ये बोलना कि वो सारे होमोसेक्सुअल होते हैं ये गलत होगा। क्या कई स्ट्रेट लोग इस तरीके की जीवनशैली नहीं जीते?

असली बात ये है कि होमोसेक्सुअल लोग भी स्ट्रेट लोगों की तरह जीते हैं, उनकी तरह पढ़ते, नौकरी करते/ पैसा कमाते, प्रेम करते और ज़िन्दगी को भरपूर तरीके से जीते हैं। उनके अंदर भी वही खामियां और खूबियां है जो स्ट्रेट लोगों में होती हैं।

ये होमोसेक्सुअल लोगों को प्रताड़ित करने वाले समाज के कुछ ठेकेदारों का बुना प्रपंच है जो आपसे ये बोलते हैं कि होमोसेक्सुअल जीवनशैली आत्मघाती है। उनके अनुसार होमोसेक्सुअल लोगों की जीवनशैली में केवल सेक्स होता है, और कुछ नहीं। अगर आप किसी होमोसेक्सुअल के साथ बैठ कर बात करेंगे तो पाएंगे कि उनमें और आप में उनकी सेक्सुअलिटी को छोड़ कर कोई फर्क नहीं है।

38. क्या सारे बाल यौन शोषण करने वाले दुराचारी गे होते हैं?

इतिहास में देखिये कि वो सारे अल्पसंख्यक समूह जिनको लोग पसंद नहीं करते हैं, उनको ऐसे बेहूदे इल्जामों में फसाया जाता है और उनके पूरे समूह को इस तरीके का रूढ़ प्ररूप उढ़ाया जाता है। उदाहरण के लिए यहूदियों को ही ले लीजिये। 15 वीं शताब्दी में उनके ऊपर ईसाई बच्चों को अगवा करने का इलज़ाम लगा कर उनका सामूहिक कत्लेआम किया गाया। अमरीका में काले लोगों पर गोरी औरतों के बलात्कार का इल्ज़ाम लगा कर उनको सरेआम मार डाला जाता था। इसी तरीके से गे लोगों को आजकल बच्चों के दुराचार से जोड़ने की कोशिश करी जा रही है। 1977 में जब अनीता ब्रायन्ट ने समलैंगिक भेदभाव पर रोक लगाने वाले डेड काउंटी अध्यादेश का विरोध किया था तो उसने उस मुहीम का नाम ''हमारे बच्चों को बचाओ'' रखा। उसने ये तक बोला की ''एक विशेष रूप से deviant दिमाग वाला शिक्षक (यानि होमोसेक्सुअल) बच्चों का यौन उत्पीड़न कर सकता है''।

बाल यौन शोषण एक दिमागी बीमारी है और इसका सेक्सुअलिटी से कोई लेना देना नहीं है। ऐसे दुराचारी किसी भी सेक्सुअलिटी के हो सकते हैं। इस बीमारी में इंसान को छोटे बच्चों के प्रति यौन आकर्षण होता है। सेक्सुअलिटी से इसका कोई लेना देना नहीं है। शोध के अनुसार, 90 % बाल यौन दुराचारी पुरूष और हेट्रोसेक्सुअल थे।

दूसरी चीज़ जो भ्रमित करती है वो ये है कि ''बालकों का यौन शोषण'' करने वाला अगर पुरूष होता है तो उसको ''होमोसेक्सुअल शोषण'' का नाम दिया जाता है। लोग शोषण को अज्ञानी तरीके से सेक्सुअलिटी से लिंक कर देते हैं। ये देखा गया है कि शोषण करने वाले को बच्चे के जेंडर और उम्र से कोई फर्क नहीं पड़ता। यौन शोषण करने वाले लोग ताकत और इच्छा की वजह से उत्तेजित होकर ये काम करते हैं। वो उनके साथ ये बुरा काम करते हैं जो उनको आसानी से मिल जाएँ। बाल यौन शोषित बच्चों में ज्यादा तर पुरूष बच्चे होते हैं क्यूंकि वो लड़कियों से ज़्यादा आसानी से दुराचारी को मिल जाते हैं।

ये समझने की खास ज़रूरत है कि होमोसेक्सुअलिटी को बाल यौन शोषण से लिंक करना क्यूंकि ज़्यादातर बच्चे पुरूष होते हैं, गलत है। ये वही बात हुई अगर आप सारे rape के मामलों को हेट्रोसेक्सुअलिटी से लिंक करें।

39. गे लोग अपने को ''queer'' क्यूँ बुलाते हैं?

इसको समझने के लिए हमको इस शब्द को समलैंगिक पुरूषों और महिलाओं के संदर्भ में समझना चाहिए। इसके लिए हमें पहले पश्चिम में

समलैंगिक सक्रियता के इतिहास के बारे में थोड़ा पता होना चाहिए क्यूंकि ये शब्द वहीं से आया है. 16 वीं सदी में अंग्रेजी शब्दावली में शामिल किए जाने के बाद से ''queer'' आम तौर पर ''असामान्य'', या ''साधारण से बाहर'', ''अजीब'' को दर्शाता है। यह शब्द, ''शक्की''या ''कुछ हट कर'', या ''हलकी गड़बड़ी'' या जो सामाजिक दृष्टि से अनुचित व्यवहार लगता है, उस व्यक्ति को दर्शाता है। बाद में, 20 वीं सदी के मुख्य भाग तक, ''queer'' अक्सर untraditional सेक्स करने वाले लोगों के लिए एक अपमानजनक शब्द के रूप में इस्तेमाल किया गया।

समलैंगिक लोग खुद को परिभाषित करने के लिए इतना आक्रामक या हानिकारक शब्द क्यूँ उपयोग करते हैं? यह सोचकर आपको आश्चर्य हो सकता है। जब 90 के दशक के दौरान समलैंगिक सक्रियता पश्चिम में बढ़ रही थी, तब सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इस शब्द को पुनः restructure किया और होमोसेक्सुअलिटी और विषमलैंगिकता से लिंक किया। यह उसी तरह था कि आपने दुशमन की बन्दूक से उसकी गोलियां निकाल दी हों। इस तरह दुश्मन अपनी चोट पहुंचाने की शक्ति खो देता है। जिस तरीके से इस शब्द को reclaim किया गया था, उससे नाखुश होकर कुछ लोगों ने इसे अपनाया नहीं। मगर ज़्यादातर लोग इसे अब ''सामान्य सामाजिक सीमा से परे'' को परिभाषित करने के लिए इस्तेमाल करते हैं। यह सामाजिक सेक्स और जेंडर की परिभाषा को तोड़ता है और एक ऐसा शब्द है जो सामान्य हेट्रोसेक्सुअल के अलावा सबको एक छत्र के नीचे लाता है।

लेकिन मुख्य तौर पर, यह हेट्रोसेक्सुअल समाज के थोपे हुए सामान्य सेक्सुअलिटी और जेंडर के पहचान की सीमाओं की परिभाषा को तोड़ता है।

40. क्यों समलैंगिक लोगों को अपनी सेक्सुअलिटी के बारे में लोगों को बताने की ज़रूरत है? हेट्रोसेक्सुअल लोग तो ऐसा नहीं करते हैं?

Heterosexuals अपनी सेक्सुअलिटी के बारे में लोगों को नहीं बताते, ये गलत है। हमारे समाज में ज्यादातर बातें और संवाद में हेट्रोसेक्सुअलिटी निहित है। यह इतने समय से हमारे संवाद में आ चुका है कि हम इसपर गौर ही नहीं करते। जब भी एक सहयोगी अपने दोपहर के भोजन की तारीफ करते हुए बोलता है कि ये उसकी बीवी ने बनाया है या फिर उसका बच्चा स्कूल में अच्छी तरह से पढ़ाई कर रहा है, तब वो अपनी हेट्रोसेक्सुअलिटी का खुलेआम प्रदर्शन कर रहा होता है। हर बार जब आपसे पूछा जाता है कि आप कब शादी कर रहें हैं, या फिर क्या आपकी कोई प्रेमिका है, तो वह ये मान के बैठे होते हैं कि आप हेट्रोसेक्सुअल हैं क्यूंकि उनके अनुसार यही नॉर्मल है।

आप मंदिरों या शादियों को देखिये, किस तरह से हेट्रोसेक्सुअलिटी से ओत प्रोत हैं।

Heterosexuality लोकप्रिय संस्कृति में और मीडीया में भी assume कर ली गयी है। आजकल कुछ फिल्म निर्माता और टीवी शो सकारात्मक होमोसेक्सुअल विषयों पर काम कर रहे हैं मगर फिर भी इसे विवादात्मक या सनसनीखेज समझा जाता है। दो समलैंगिक पुरूषों या महिलाओं के बीच प्यार अभी भी स्वीकार्य व्यवहार के रूप में नहीं माना जाता है, इसकी

वजह है कि हमारे हेट्रोसेक्सुअलिटी से ओत प्रोत समाज में जब भी होमोसेक्सुअलिटी का ज़िक्र आता है तो वह आक्रामक प्रतीत होता है।

हेट्रोसेक्सुअल लोग अपनी सामाजिक और पारिवारिक तौर पर पायी जाने वाली आज़ादी के आदी हो चुके हैं और उनको ये अजीब लगता है कि होमोसेक्सुअल लोगों को भी वही अधिकार चाहियें। अगर आप किसी व्यक्ति को सालों तक कैद में रखें और एक दिन अचानक उसे रिहा कर दें तो उसे कैसा लगेगा? उसे तो केवल आज़ादी के साथ इधर उधर घूमने में ही अच्छा लगेगा। बाकी दुनिया को शायद ये अजीब लगे मगर उस व्यक्ति के लिए तो ये एक विलक्षण अनुभव है। यही होता है जब होमोसेक्सुअल लोग अपने बारे में दोस्तों, परिवार आदि को बताते हैं। उनके लिए ये एक आज़ादी से कम नहीं है, ऐसी आज़ादी जो हेट्रोसेक्सुअल लोगों को पैदा होते ही मिल जाती है मगर होमोसेक्सुअल लोगों को कितनी परेशानी के बाद मिलती है।

यौन और मानसिक स्वास्थ्य

41. क्या समलैंगिकता एड्स और अन्य यौन संचारित रोगों का कारण नहीं है?

एड्स या एक्वायर्ड इम्यूनो डेफिसिएंसी सिंड्रोम एक अवस्था है जो एचआईची (हयूमन इम्यूनो वायरस) से होती है। यह बीमारी व्यक्ति की प्रतिरक्षा प्रणाली को विफल करना शुरू कर देती है और वो ऐसी बीमारियों के संक्रमण के खतरे में आ जाता है जो किसी और अच्छी प्रतिरक्षा प्रणाली वाले व्यक्ति के लिए मामूली संक्रमण हैं। एड्स एक टर्मिनल हालत है जो व्यक्ति को HIV के कारण हो सकती है। HIV के होने से ये जरूरी नहीं है की व्यक्ति को एड्स हो। स्ट्रेट लोगों की तुलना में गे लोग HIV से ज़्यादा पीड़ित होते हैं क्यूंकि उनको सेफ सेक्स और कंडोम के बारे में जानकारी नहीं होती। इसका ये मतलब नहीं है कि ये एक होमोसेक्सुअल बीमारी है। हमारे समाज में सेक्स के बारे में ज्ञान ज़्यादातर लोगों को नहीं दिया जाता। अधिकतर पुरूष यही सोचते हैं कि कंडोम तो परिवार नियोजन के लिए है। इसीलिए कई गे लोग ये सोचकर कि उन्हें परिवार नियोजन नहीं करना, इसके बिना सेक्स करते हैं और बीमारियों का शिकार होते हैं। होमोसेक्सुअल लोगों में गुदा मैथुन के द्वारा सेक्स होता है। अगर कंडोम का उपयोग न किया जाये तो संक्रमण का चांस रहता है। गुदा योनि से ज़्याद नाजुक होती है और इसलिए कंडोम का प्रयोग अत्यधिक ज़रूरी है।

एचआईवी वायरस विभिन्न तरीके से फैल सकता है जैसे यौन गतिविधियां, गर्भावस्था के माध्यम से, एक संक्रमित व्यक्ति के साथ सुइयों के बंटवारे से, रक्त आधान के समय, आदि। जाहिर है कि यह

केवल यौन आचार से नहीं फैलता। यह भी ज़रूरी नहीं है कि इससे केवल होमोसेक्सुअल प्रभावित होते हैं। और क्यूंकि HIV ''हयूमन'' वायरस है और कोई गे या लेस्बियन वायरस नहीं, इसलिए इसको सेक्सुअलिटी के साथ लिंक करना गलत है। असुरक्षित यौन व्यवहारों में लिप्त किसी भी व्यक्ति को एचआईवी वायरस से ग्रस्त होने का खतरा होता है, या किसी भी अन्य यौन संचारित रोग से भी। हेट्रोसेक्सुअल और समलैंगिक लोगों में जो भी असुरक्षिरत यौन सम्बन्ध बनाते हैं, वो दोनों ही एड्स और अन्य एसटीडी का जोखिम लेते हैं। समलैंगिकता अगर एड्स का 'कारण' है तो फिर सभी होमोसेक्सुअल लोगों में ये क्यूँ नहीं होता? एक अभिवाचक के रूप में, आप अपने बच्चे को सेफ सेक्स का ज्ञान दें। इस तरीके से वो एक स्वस्थ तौर पर रोमांटिक जीवन जी सकते हैं। आप खुद इसके बारे में और पढ़ें ताकि आप अपने बच्चे के सवालों के सही जवाब दे सकें और उसे गाइड कर सकें। नहीं तो उसे एक सूचित सामान्य स्वास्थ चिकित्सक के पास ले जाएँ जो आप दोनों को इसका ज्ञान दे।

42. क्यों समलैंगिक पुरूषों को एचआईवी संचरण के संदर्भ में उच्च जोखिम वाले समूहों में माना जाता है?

'उच्च जोखिम समूह' एक औसत दर्जे का पैरामीटर है जो जेनेटिक दोष, भौतिक गुण, जीवन शैली, पर्यावरण आदि पर परिभाषित किया जाता है और जो किसी विशेष बीमारी के जोखिम की उम्मीद पर ज़्यादा होता है. इसका यह मतलब नहीं है की इन मापदंडो को हम बीमारी का कारण मान लें। उदाहरण के लिए, सीडीसी (रोग नियंत्रण और रोकथाम के लिए केंद्र) द्वारा एक अनुसंधान में पाया गया कि अफ्रीकी अमेरिकियों की तरह कुछ जातीय समूहों में मधुमेह के लिए उच्च जोखिम है। लेकिन इसका ये

मतलब नहीं है कि सभी अफ्रीकी अमेरिकी मधुमेह से ग्रसित होते हैं या उनकी वजह से मधुमेह होता है।

समलैंगिक पुरूषों को HIV के ''उच्च जोखिम समूह'' में रखने के कई सांस्कृतिक या सामाजिक कारण हैं। प्रमुख चिकित्सा कारणों में से एक, जो पिछले जवाब में बताया गया था, वह यह है की योनि संभोग के comparison में गुदा सेक्स के माध्यम से संक्रमण होना आसान है। अन्य कारणों में ये भी है कि होमोसेक्सुअल पुरूषों तक सेफ सेक्स और चिकित्सा पहुँचना मुश्किल है क्यूंकि उनमें से ज़्यादातर अपने को समाज से छुपा कर रखते हैं, प्रताड़ित होने के भय से। समलैंगिक यौन संबंध रखना कानून के तहत एक दंडनीय अपराध माना जाता है और इसके नतीजे में समलैंगिक पुरूषों को यौन समस्याओं के लिए चिकित्सा सहायता प्राप्त करना और भी मुश्किल है। यहाँ तक कि हमारे यौन शिक्षा पाठ्यक्रम में असुरक्षित समलैंगिक यौन संबंध के माध्यम से होने वाले एचआईवी संक्रमण के बारे में बताते ही नहीं हैं। अभी भी बच्चों को यही सिखाया जाता है कि कंडोम गर्भावस्था से बचने के लिए उपकरण हैं। किशोर जब असुरक्षित यौन सम्बन्ध बनाते हैं तो वो इन संक्रमणों का शिकार बनते हैं। जब तक सामाजिक सुधार यह सुनिश्चित नहीं कर लेते कि समलैंगिक पुरूषों को चिकित्सा सहायता पहुँचाई जाये, तब तक वह एचआईवी और अन्य एसटीडी के लिए एक उच्च जोखिम समूह रहेंगे।

43. क्या लंबी अवधि तक गुदा सेक्स शरीर के लिए हानिकारक नहीं होता ?

गुदा सेक्स एक विशेष रूप से समलैंगिक यौन गतिविधि नहीं है। इसके अलावा, उचित देखभाल बिना किसी भी यौन क्रिया को करने से शरीर को नुकसान हो सकता है। यहाँ तक कि हेट्रोसेक्सुअल योनि सेक्स अगर

सही से नहीं किया जाये तो योनि की दीवारें टूट सकती हैं। गुदा सेक्स यदि उचित स्वच्छता और स्नेह के साथ किया जाये, तो यह एक सार्थक अनुभव हो सकता है और शरीर को कोई नुकसान भी नहीं पहुँचता।

हम सोचते हैं कि गुदा सेक्स अप्राकृतिक है क्यूंकि हमें लगता है कि गुदा सेक्स के लिए नहीं बनी। हम प्रकृति के इरादे को नहीं समझ सकते क्यूंकि प्रकृति का कोई इरादा ही नहीं होता। सुरक्षित रूप से किये गए गुदा सेक्स से कोई परेशानी नहीं होती। गुदा सेक्स के बारे में 2 शताब्दी ई. के कामसूत्र में लिखा गया था और यहाँ तक कि खजुराहो के कई मंदिरों में इसे देखा जा सकता है। हम मनुष्य हैं और गुदा सेक्स हेट्रोसेक्सुअल और होमोसेक्सुअल दोनों तरह के मनुष्य सदियों से करते आ रहे हैं। स्पष्ट रूप से यह एक हानिकारक गतिविधि नहीं है।

हर समलैंगिक आदमी गुदा सेक्स करता है ये भी सही नहीं है। एक संतुष्टिदायक यौन जीवन के लिए होमोसेक्सुअल व्यक्ति और भी कई चीजें करता है।

44. क्यों काफी समलैंगिकों में गम्भीर अवसाद पाया जाता है? क्यों इस समुदाय में आत्महत्याओं की संख्या ज़्यादा है?

दर्जनों शोधों के अध्ययन से ये पता चला है कि होमोसेक्सुअल और हेट्रोसेक्सुअल लोगों के मानसिक/ मनोवैज्ञानिक प्रदर्शन के बीच कोई भेद नहीं है। इसके अलावा होमोसेक्सुअल्स में भावानात्मक अस्थिरता या मानसिक बीमारी की उच्च दर के कोई सबूत नहीं हैं। हालांकि, शोधकर्ताओं ने पाया है कि समलैंगिक लोगों में आत्महत्या की प्रवृत्ति, प्रमुख अवसाद और चिंता विकार सहित भावनात्मक समस्याओं का काफी

अधिक खतरा होता है। और इसका कारण होमोसेक्सुअलिटी के साथ जुड़े कलंक और अस्वीकृति हैं।

जब एक व्यक्ति गंभीर रूप से उदास है तो वह तभी आत्महत्या का विचार या प्रयास करने की कोशिश करता है। एक शोध के अनुसार, होमोसेक्सुअल व्यक्ति जिसे समाज, मित्र और परिवार ने अस्वीकृत कर दिया है या जिसे बदमाशी या यौन मौखिक उत्पीड़न से गुज़रना पड़ता है वो स्ट्रेट लोगों से आठ गुना अधिक अवसाद में जाने का खतरा रखता है। 90 % होमोसेक्सुअल लोगों को उनकी सेक्सुअलिटी या जेंडर को लेकर उनके स्कूल या काम के माहौल में परेशान किया जाता है।

अगर व्यक्ति अपनी सेक्सुअलिटी के बारे में लोगों को नहीं बताता है फिर भी उसको समाज/ धर्म में व्याप्त होमोसेक्सुअल्स के खिलाफ लोगों के विचारों से क्षति पहुँचती है। सभी लोगों पर समाज के अनुसार आचरण करने का दबाव होता है, होमोसेक्सुअल लोगों पर ये दबाव ज़्यादा होता है। जब वो देखते हैं कि उनके दोस्त या परिवार होमोसेक्सुअलिटी के बारे में अच्छे विचार नहीं रखते तो वो अंदर ही अंदर घुटने लगते हैं और अवसाद की तरफ मुड़ जाते हैं। कई युवा इसलिए अवसाद की तरफ मुड़ जाते हैं क्यूकि उनको बचपन में या किशोरावस्था में उनकी सेक्सुअलिटी के बारे में किसी ने गाइड नहीं किया। वो अपने को एब्नार्मल समझते हैं। यह विचार कि वो अस्वीकार्य हैं, उनको आत्महत्या की तरफ धकेल देता है।

LGBT व्यक्तियों के माता–पिता और संरक्षक के रूप में, आप सुनिश्चित कर सकते हैं कि आपका बच्चा अन्य लोगों की तरह आघात या अवसाद का शिकार न हो जाये। आप जितना ज़्यादा उसे स्वीकृत करेंगे

और समझेंगे, वो अवसाद या आत्महत्या के विचार से उतना ही दूर रहेगा. यदि आपको लगता है कि उसे उसके स्कूल या ऑफिस में सेक्सुअलिटी को लेकर परेशान कर रहे हैं तो उसकी मदद कीजिये। जब आपके बच्चे को लगता है कि उसका खयाल रखा जा रहा है तो वह अपनी सेक्सुअलिटी को लेकर सुरक्षित हो जाता है और उसकी ज़िन्दगी का नज़रिया एक सकारात्मक दृष्टिकोण में बदल जाता है।

शादी

45. उसे कैसे अपने बुढ़ापे के लिए एक साथी मिलेगा? वह क्या अकेला मर जाएगा?

यह डर भी वही है जो आपसे कहता है कि सेक्स केवल बच्चे पैदा करने के लिए है। किसी भी रिश्ते में बच्चे पैदा करना/ पालना एक बड़ा फैसला होता है और इसके बारे में काफी विचार करना पड़ता है। कई heterosexuals बच्चों को पैदा करने का फैसला करते हैं, कई उनको पैदा करने में असमर्थ होते हैं। इसी तरह कई होमोसेक्सुअल दम्पति अपने साथी के साथ बच्चों को पालने का चयन करते हैं। इन परिवारों में पाले गए बच्चों के अनुसार एक परिवार में सबसे महत्वपूर्ण है प्यार और एक दूसरे का खयाल रखने की भावना।

46. क्या शादी संभव है?

सबसे पहले, शादी क्या होती है ये समझते हैं, विवाह 3 स्तरों पर लोगों के बीच का एक बंधन है:

1. व्यक्तिगत
2. सामाजिक
3. कानूनी

भारत में एक सेक्स के लोगों को शादी करने का अधिकार नहीं है। इसका ये मतलब है कि हेट्रोसेक्सुअल जो अधिकार रखते हैं वो होमोसेक्सुअल लोगों को उपलब्ध नहीं हैं। समलैंगिक जोड़े यह कर सकते हैं कि उनके परिवार या दोस्तों के सामने औपचारिक या सामाजिक अनुष्ठानों के

जरिये आपस में शादी कर लें। सरकार ऐसा करने से आप को रोकने में सक्षम नहीं है। भारत सरकार ने कुछ ऐसे समलैंगिक विवाहों को मान्यता दी है जिसमें जोड़ों ने ऐसे विदेशी मुल्कों जहाँ होमोसेक्सुअल शादियाँ जायज़ हैं, वहाँ शादी करी थी। मगर भारत में होने वाले होमोसेक्सुअल विवाह को बहुत कम क़ानूनी मान्यता है।

हालांकि, यदि आप एक दूसरे को प्यार करते हैं और अपने परिवार और समुदायों के सामने आपस में एक व्यक्तिगत और सामाजिक अनुष्ठान के रूप में शादी करते हैं, तो दो पुरूषों या दो महिलाओं के बीच का ये बंधन लोग स्वीकार कर लेते हैं।

भारतीय कभी भी अपनी शादियों को सरकार द्वारा ratify या recognize करवाने को अहमियत नहीं देते। विवाह को हमेशा एक सामाजिक और व्यक्तिगत मामला माना गया है। आज़ादी के पूर्व के दिनों में, ब्रिटिश सरकार ने उन सभी शादियों को निरस्त करने का एक कानून लगाया था जिन्होंने अनिवार्य रूप से उसे सरकार के साथ पंजीकृत नहीं करवाया था। गांधीजी ने इसका विरोध किया और बोला कि शादी एक व्यक्तिगत और सामाजिक मामला है और सरकार का इसमें कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।

हमारी संस्कृति में किसी ने भी कभी भी किसी अधिकारी को अपनी शादी मान्य करने के लिए नहीं बोला है। भारतीय संस्कृति में अपरंपरागत विवाह के कई उल्लेखनीय उदाहरण देखे गए हैं। ऐसा ही एक उदाहरण एक त्योहार है जिसमें Koovagam में गाँव देवता Aravaan की एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति (जो कि एक कृष्ण अवतार है) के साथ शादी की जाती है। पूरा गाँव हर साल 18 दिनों तक ये शादी मानता है। हमारी संस्कृति

और पौराणिक कथाओं में ऐसी कई शादियों के उदाहरण हैं जो न सिर्फ एक पुरूष और पुरूष /महिला और महिला के बीच थे बल्कि सामाजिक रूप से स्वीकार किए जाते थे।

47- आप एक लेस्बियन से शादी नहीं कर सकते क्या? और दोनों एक गुप्त जीवन व्यतीत करें?

वो शादी जो यौन या भावनात्मक रूप से न जुड़े दो व्यक्तियों के बीच होती है, सफल नहीं होती। सुविधा के विवाह हेट्रोसेक्सुअल भी करते हैं मगर वो एक निजी फैसला है कि आप वो करना चाहते हैं की नहीं। आप अगर अपने बच्चे की हेट्रोसेक्सुअल शादी करवा भी देते हैं तो फिर आप कब तक इस झूठ को जी पाएंगे। और कब तक आपका बच्चा इस झूठ और बंदिश भरी ज़िन्दगी को झेल पायेगा।

आपके बच्चे की शादी आपका फैसला नहीं बल्कि आपके बच्चे का फैसला है। वो किससे शादी करना चाहता है और कब, ये उसे decide करने दें। उसे अगर ऐसी सुविधा वाली शादी करने में सही लगता है तो वो ये कर लेगा। मगर मामला तब बड़ा अजीब होगा यदि आपका बच्चा शादी तो हेट्रोसेक्सुअल/ सुविधा की कर रहा है मगर प्यार वो किसी और से करता है। क्या ऐसे में आप अपने बच्चे को शादी करने को कहेंगे ये जानते हुए भी कि वो ये करके कभी खुश नहीं रहेगा। अगर आप अपने बच्चे की हेट्रोसेक्सुअल शादी करवाना चाहते हैं तो उसकी मर्ज़ी जान लें और लड़की के परिवार को भी अपने बच्चे की होमोसेक्सुअलिटी के बारे में बताएं। अगर तब दोनों लड़का लड़की राज़ी होते हैं, तो शादी करने में कोई बुराई नहीं है क्यूंकि ये उनका फैसला है।

आप सुविधा की एक शादी में अपने बच्चे को डालने से पहले सोचें कि आप ये करवा कर उससे क्या कह रहे हैं। आप उससे कह रहे हैं कि वो

एक झूठी ज़िन्दगी बिताये ताकि आप अपना सामाजिक मान साम्मान बचाये रखें। आप उसको उसकी आज़ादी और सच्चाई को मार कर झूठ का रास्ता दिखा रहे हैं और बोल रहे हैं कि आप उसका साथ समाज के खिलाफ नहीं दे सकते।

48. क्या मेरा बेटा/ बेटी एक परिवार नहीं चाहता? क्या उसके बच्चे होमोसेक्सुअल होंगे?

बच्चे पालना/पैदा करना एक व्यक्ति/दंपत्ति का आपस का फैसला है। अगर वो चाहते हैं तो वो इसके बारे में प्रयत्न करेंगे, उसी तरह से जैसे कि हेट्रोसेक्सुअल दंपत्ति जिनको बच्चा पैदा नहीं हो सकता। होमोसेक्सुअल और हेट्रोसेक्सुअल दोनों तरह के लोगों में ममता उतनी ही विद्यमान रहती है। वो surrogacy, एडॉप्शन आदि तरीकों से अपनी ये इच्छा पूरी कर लेंगे।

ऐसा कभी भी नहीं देखा गया है की किसी होमोसेक्सुअल दंपत्ति के बच्चे का कम मानसिक, शारीरिक विकास हुआ हो या वो अभाव में पाला गया हो या उसपर होमोसेक्सुअल बनने का दबाव पड़ा हो। शोध में देखा गया है कि लेस्बियन माओं के बच्चों का सेक्सुअल विकास हेट्रोसेक्सुअल दम्पत्ति के बच्चों की तरह ही होता है।

और ऐसे कई मामले देखे गए हैं जिनमें बच्चा एक ही अभिभावक के साथ बड़ा हुआ है और उसे कोई परेशानी नहीं हुई है।

बाइसैक्सुअलिटी

49. वह बाइसेक्सुअल है तो फिर वो विपरीत लिंग के व्यक्ति से शादी क्यूँ नहीं कर सकता?

इसको समझने के लिए एक उदाहरण लें। आप अपनी मर्ज़ी के व्यक्ति के साथ शादी करने वाले हैं जिससे आप प्यार करते हैं। मगर आपके माता–पिता आपको ऐसे व्यक्ति के साथ शादी करने के लिए मजबूर कर देते हैं जिसे आप प्रेम नहीं करते। आपके पूछने पर वो आपको बोलते हैं कि इसमें क्या खराबी है, क्यूंकि शादी तो एक लड़की से ही हो रही है चाहे वो आपके पसंद की हो या नहीं। ऐसी शादी करना आपको कैसा लगेगा?

यही होता है जब आप अपने बच्चे को यह करने के लिए कहते हैं। आप उसे बोल रहे हैं कि शादी केवल जननांगो का मेल है, आत्मा का नहीं। शादी केवल सेक्स के लिए नहीं बल्कि दो आत्माओं, उनकी खुशियों और खूबियों का मिलन होता है।

बाइसेक्सुअल लोगों को काफी प्रताड़ित किया जाता है। होमोसेक्सुअल लोगों के बीच भी उनको कुछ लोग पसंद नहीं करते क्यूंकि कुछ लोग पहले अपने को बाइसेक्सुअल बताते हैं (समाज में अपनी इज़्ज़त बचाये रखने के लिए), और बाद में खुद की असलियत यानि कि वो होमोसेक्सुअल हैं, बता देते हैं। लोग सोचते हैं कि बाइसेक्सुअल लोगों को दोनों ही लिंगों में आकर्षण होता है। ये गलत है। वो होमोसेक्सुअल या हेट्रोसेक्सुअल के बीच किसी भी व्यक्ति जो उनके मन, मस्तिष्क और हृदय को भाता है, उसकी तरफ आकर्षित होते हैं। यह जानना कि वो

कितना आकर्षित पुरूषों की तरफ और कितना महिलाओं की तरफ होते हैं, नामुमकिन है। हमको बाइसेक्सुअल लोगों को उनके जीवनसाथी चुनने का पूरा अधिकार देना चाहिए। सभी को ये अधिकार होना चाहिए कि वो समझें कि वो कौन हैं और अपनी पसंद के व्यक्ति को अपने साथी के रूप में पसंद करें। जननांगो से ऊपर उठ कर सोचें। आपका बेटा शायद एक महिला के प्रति आकर्षित होकर उससे शादी कर ले और शायद एक पुरूष से। दोनों ही वाक्यों में आपको ये स्वीकार्य होना चाहिए।

आपको चिंता इस बात की होनी चाहिए कि आपके बेटे का पार्टनर उसे कैसे ट्रीट करता है, और उसे खुश रखता है कि नहीं और यह नहीं कि वह किस लिंग का है।

50. बाइसेक्सुअल लोग क्या अपनी सेक्सुअलिटी को लेकर भ्रमित नहीं होते हैं/ क्या उनके लिए ये एक फेज नहीं है?

अपनी सेक्सुअलिटी को लेकर होमोसेक्सुअल और स्ट्रेट लोग भी भ्रमित होते हैं और उसके बारे में जवाब ढूँढ़ते हैं। बाइसेक्सुअल कोई भिन्न नहीं होते। इसका ये मतलब नहीं है कि ये एक फेज है और चला जायेगा। ये एक पूरी तरह से साबित किया हुआ सेक्सुअल ओरिएंटेशन है जिसमें व्यक्ति को दोनों जेंडर में अट्रैक्शन हो सकता है। कितना अट्रैक्शन किस जेंडर की तरफ होता है ये मापना असम्भव है और यही कई बार confusion पैदा करता है।

सेक्सुअलिटी बहुत ही विशाल और विविध विषय है और हमने अभी ही इसको समझना शुरू किया है। एक बात तो साफ़ है कि आकर्षण के बारे में सबसे अधिक तो वही व्यक्ति जानते हैं जो उसे महसूस कर रहे हैं।

बाइसेक्सुअल लोगों के ऊपर ये इलज़ाम लगाना छोड़ना चाहिए कि वो confused हैं और उनको प्रेम करने और अपने पसंद के व्यक्ति के साथ जीवनयापन करने से रोकना/ डराना /धमकाना नहीं चाहिए।

51. क्या बाइसेक्सुअल लोग monogamous (एक पुरूष/ स्त्री गामी)हो सकते हैं?

एकल होने की क्षमता बहुत ही व्यक्तिगत है। यह आपके जेंडर या सेक्सुअलिटी पर निर्भर नहीं करता है. यह आपके जेनेटिक मेकअप, अपने पर्यावरण और आपकी एक रिश्ते को वफादारी से निभाने की नियत/ इच्छा पर निर्भर करेगा. अगर बाइसैक्सुअलिटी किसी को धोखा देने का एकमात्र कारण है तो इसका मतलब होमोसेक्सुअल और हेट्रोसेक्सुअल लोग किसी को धोखा दे नहीं सकते।

अधिकांश लोग वो चाहे किसी भी सेक्सुअलिटी के हों, अन्य लोगों के प्रति अपनी इच्छाओं को कण्ट्रोल नहीं कर पाते। मगर वो उन इच्छाओं पर कार्य करने की अपनी क्षमता का चयन ज़रूर कर सकते हैं. बाइसेक्सुअल लोग होमोसेक्सुअल और हेट्रोसेक्सुअल लोगों की तरह इच्छाओं से प्रभावित होते हैं। मगर उन इच्छाओं पर कारवाई करने के लिए खुद को नियंत्रित करना/ न करना पूरी तरह से उन पर निर्भर है।

तो, हाँ, बाइसेक्सुअल लोग, heterosexuals और समलैंगिकों की तरह एकल होने में सक्षम हैं, लेकिन वे इसमें सफल होते हैं या नहीं, ये उन पर निर्भर है।

References:

[1] "National Geographic Explains the Biology of Homosexuality." YouTube. YouTube, 04 Feb. 2009. Web. 13 Apr. 2013.

[2] Simon LeVay. Salk Institute for Biological Studies, San Diego, CA 92186. Web. http://www.sciencemag.org/content/253/5023/1034. 30 August 1991

[3] Brook, Charles, Gerard S. Conway, and Melissa Hines. "Androgen and Psychosexual Development: Core Gender Identity, Sexual Orientation, and Recalled Childhood Gender Role Behavior in Women and Men with Congenital Adrenal Hyperplasia (CAH)." Journal of Sex Research 41.1 (2004): 75-81. Online

[4] 'Homosexuality and Bisexuality'. Sex and Human Loving. William Masters, Virginia Johnson, Robert Kolodny. Book. ISBN 81-7224-041-4

[5] '1,500 animal species practice homosexuality'. October 23, 2006 at 4:28 PM http://www.news-medical.net/news/2006/10/23/20718.aspx

[6] Devdutt Patnaik. Mythologist and Historian. http://devdutt.com/blog/did-homosexuality-exist-in-ancient-india.html. June 30, 2009

[7]"Love: it's all the same to the brain". 4th Jan 2011. Web. http://phys.org/news/2011-01-brain.html

[8] Colapinto, J (2001). As Nature Made Him: The Boy Who Was Raised as a Girl. Harper Perennial. ISBN 0-06-092959-6. Revised in 2006

[9] "Study on Child Abuse: India 2007" (PDF). Published by the Government of India, (Ministry of Women and Child Development). http://wcd.nic.in/childabuse.pdf

[10] The Sambia: ritual, sexuality, and change in Papua New Guinea. Gilbert H. Herdt. Book.

[11] Rosario, M., Schrimshaw, E., Hunter, J., & Braun, L. (2006, February). Sexual identity development among lesbian, gay, and bisexual youths: Consistency and change over time. Journal of Sex Research, 43(1), 46–58. Retrieved February 8, 2011.

[12] "India has 2.5m gays, government tells supreme court." BBC UK. Web. http://www.bbc.co.uk/news/world-asia-india-17363200

[13] Facts Regarding "Reparative Therapy". Web. http://community.pflag.org/page.aspx?pid=503

[14] "Gay Marriage: Same, but Different". 1st July, 2013. Web. http://well.blogs.nytimes.com/2013/07/01/gay-marriage-same-but-different/?_r=0

[15] "Facts About Homosexuality and Child Molestation". Web. http://psychology.ucdavis.edu/rainbow/html/facts_molestation.html

[16] Groups Especially Affected by Diabetes. Web. http://www.cdc.gov/diabetes/consumer/groups.htm

[17] “Homosexuality and Mental Illness”. By J. Michael Bailey, PhD.
http://archpsyc.jamanetwork.com/article.aspx?articleid=205342

DEEPAK KASHYAP

COUNSELLING AND
TRAINING SERVICES

info@deepakkashyap.com
deepak.j.kashyap@gmail.com
Skype: deepak.kashyap2
M: + 91 976 933 1585
www.deepakkashyap.com